

आर्य
अर्य जीवन्



जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
हिन्दू-तेलुगु द्विभाषा पक्ष पत्रिका

SWAMI DAYANAND SARASWATI THE MAKER OF MODERN INDIA

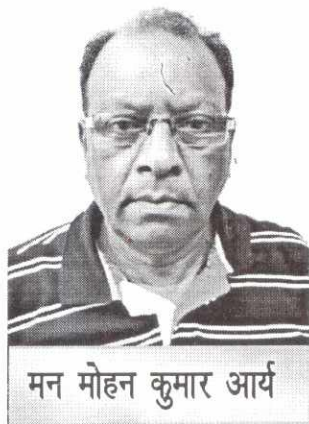


Swami Dayanand Saraswati is certainly one of the most powerful personalities who have shaped modern India and are responsible for its moral regeneration and religious revival. The most prominent Arya Samajists are at the same time the most influential nationalist leaders....

-Netaji Subhash Chandra Bose

‘वैदिक धर्म, मत-मतान्तर एवं आर्य समाज’

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।



मन मोहन कुमार आर्य

सुदूर अतीत में इस सृष्टि की रचना के बाद जब पहली बार मनुष्य का जन्म हुआ तो आंख को खोलने के साथ उसने सोचा होगा कि वह कहाँ है, कौन है, यह संसार क्या है और उसका उद्देश्य क्या है, आदि? आरम्भिक मनुष्य इस सृष्टि में अकेला नहीं था। उसके साथ व आस-पास अनेक मनुष्य उत्पन्न हुए थे जो सभी युवा थे और उनमें स्त्री व पुरुष दोनों थे। इसके जन्म लेने से पूर्व ही सृष्टि में वनस्पतियाँ लहलहा रही थी। जल से भरे नदी व नाले आसपास बह रहे थे। अहिंसक पशु उसके इर्द-गिर्द घूम रहे थे। पक्षी उड़ रहे थे एवं चहचहा रहे थे। सारा वातावरण उसको विस्मित व अचम्भित कर रहा था। इस प्रकार का चिन्तन मनुष्य में तभी होना सम्भव है जब कि उसको किसी एक भाषा का ज्ञान हो। यहां केवल एक ही सम्भावना है कि उसको भाषा संसार के स्रष्टा व रचयिता “ईश्वर” से ही प्राप्त हो सकती थी व हुई थी। यह नया मानव यह नहीं जानता था कि जो प्रकाश सूर्य से उसे प्राप्त हो रहा है, उस सूर्य, प्रकाश आदि के नाम क्या हैं, नदी व जल के स्रोत जो उसके आसपास विद्यमान थे, उनके नाम व संज्ञाओं से भी वह सर्वथा अपरिचित व अनभिज्ञ था। उसे स्वयं के नाम व अंगों का भी किंचित अता-पता नहीं था। भूख व प्यास से भी वह सर्वथा अपरिचित था। उसे इन सबके व अपने कर्तव्य के बारे में कि जीवनयापन कैसे, किस उद्देश्य से व क्यों करना है, ज्ञात नहीं था। किस काम को करना चाहिये और किन कामों को नहीं इसका भी उसे किंचित ज्ञान नहीं था। इसकी उसे तत्काल आवश्यकता थी जिससे उसका जीवनयापन सार्थक, उद्देश्यपूर्ण व लक्ष्य की प्राप्ति के अनुकूल हो। सभी मनुष्य पूर्णतः अज्ञानी थे। कोई आपस में ज्ञान का आदान-प्रदान नहीं कर सकते थे। भाषा का ज्ञान न होने तक परस्पर बातचीत कर अपने सुख-दुख भी एक दूसरे को बता नहीं सकते थे। ऐसी विषम परिस्थिति कुछ थोड़े समय के लिए उनके सामने उपस्थित हुई। दूसरी ओर ईश्वर सर्वज्ञ होने के कारण उसकी हर परेशानी व कष्ट व दुःख से परिचित था। वह उसकी हर परेशानी व कष्ट को दूर करने में सक्षम व समर्थ था। उसने फिर देर क्यों लगानी थी? अपने नित्य ज्ञान, ऋग-यजु-साम-अथर्व वेद को वह आरम्भ में ही चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा के माध्यम से भाषा व मन्त्रार्थ सहित प्रदान करता है जिससे उसके सच्चिदानन्द, सृष्टिकर्ता, सर्वज्ञ व कर्म-फल व मुक्ति आदि के देने वाले स्वरूप का बोध होता है। ईश्वर से प्राप्त सब सत्य विद्याओं के ज्ञान वेद को यह चारों ऋषि अन्य ऋषि ‘ब्रह्मा’ को प्रदान कर स्वयं भी अन्य वेदों का ज्ञान अर्जित कर पश्चात शेष सभी मनुष्यों को कराते हैं जिससे सृष्टि के आरम्भ से ही सभी मनुष्यों को कर्तव्य के बोध के साथ सृष्टि के निमार्ण एवं जीवन के उद्देश्य आदि से जुड़ी शंकाओं का निवारण हो जाता है। उन्हें यह ज्ञात हो जाता है कि भोजन के रूप में कन्द मूल व फलों एवं गोदुग्ध व जल आदि का पान कर जीवन निर्वाह करना है। सृष्टि के आरम्भ में आदि मानवों के सामने भोजन की कोई समस्या नहीं थी। पर्याप्त कन्द मूल एवं फल व दुग्ध प्रचुरता से उपलब्ध था। वेदों के ज्ञान व अपने विवेक से उन्होंने दुग्ध से घृत, नवनीत-मक्खन, छाछ, दही आदि बनाये व कृषि कर गेहूं, चावल, हरि सब्जियाँ उत्पन्न कर यथा आवश्यकता उनका सेवन आरम्भ कर दिया था। अतः पुस्तकों में जो पढ़ाया जाता है कि आदि मानव सृष्टि के आरम्भ काल में पत्थरों आदि को हथियारों के रूप में प्रयोग करके पशुओं का शिकार कर तथा उन्हें अग्नि में तपा कर अपनी क्षुधा व भूख दूर करता था, यह हमारे विदेशी बन्धुओं का अपनी प्रवृत्तियों के अनुरूप अविवेक व छलयुक्त मान्यता व निर्णय है। यह प्रायः ऐसा ही है जैसे कि अज्ञानी मनुष्य ज्ञानी मनुष्य को अपनी ही तरह अज्ञानी व मूर्ख समझ लेता है। यह एक सौ प्रतिशत सत्य है कि आदि मानव पूर्णतः शाकाहारी व निरामिष भोजी था।

ऋषियों को वेदों का ज्ञान मिलने व उनके द्वारा अन्य मनुष्यों को विद्यादान व शिक्षण के द्वारा ज्ञान प्रदान किए जाने से सभी समस्याओं के हल मिल गये और जीवनयापन से सम्बन्धित कोई मुख्य समस्या नहीं रही। इसे समझने के लिए इतना ही जानना आवश्यक है कि सभी व अधिकांश समस्यायें अज्ञान से उत्पन्न होती हैं और ज्ञान प्राप्त होने पर उनका निवारण हो जाता है। ऐसा ही वेदों का ज्ञान प्राप्त होने व ऋषियों द्वारा उनका प्राचार करने से हुआ। दिन-प्रतिदिन ज्ञान का प्रयोग कर नये-नये आविष्कार व कार्य

ओ३म्

आर्य जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

ఆర్య జీవన్

హిందू-తెలుగు ద్వైతాపా పక్ష పతిక

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
हैदराबाद का मुख पत्र

वर्ष : २२ अंक : २०

दयानन्दाब्द : १९०

सृष्टि संवत् : १९७२९४९११३

वि.सं. : २०७०

नंदन नाम संवत् आश्विन कृष्ण पक्ष

२७-१०-२०१३

सम्पादक

विठ्ठलराव आर्य

वार्षिक मूल्य रु. 100

कार्यालय

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद

दूरभाष : 040-24753827, 66758707,
24750363

फ्याक्स : 040-24557946, 24756983

Email :

aaryajeevan_aaryajivan@yahoo.co.in.
arpratinidhisabha@yahoo.co.in.
acharyavithal@gmail.com,
aryavithal@yahoo.co.in.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE
MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

Editor: Vithal Rao Arya

Annual subscription: Rs.100/-

प्रत्येक मनुष्य को पुरुषार्थ पर ध्यान देना चाहिए। इसी के द्वारा क्रियमाण, संचित और प्रारब्ध कर्म की स्थिति सुधरती है। इसी से मनुष्य उत्तम स्थिति को प्राप्त हो कर उन्नति के पात्र बनते है।

सत्य का प्रकाश : सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ मई १८७४ में मुरादाबाद 'उ.प्र' के राजा जयकृष्णदास के प्रस्ताव पर १२ जून १८७४ से लेकर सितम्बर १८७४ तक अर्थात् कुल साढ़े तीन महीने में महर्षि दयानन्द द्वारा महाराष्ट्रीय ब्राह्मण लिपिक पं. चन्द्रशेखर को बोल-बोल कर लिखाया ग्रन्थ है, जो फरवरी १८७५ में वाराणसी से प्रकाशित हुआ था। यह दुर्भाग्य कहिये कि महर्षि को लिपिक से लेकर जो भी सहयोगी मिले, उनमें अनेक धोखेबाज निकले, इसलिये सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण लेखन में मिलावट के कारण महर्षि को निरस्त घोषित करना पड़ा। द्वितीय संस्करण के सम्पादक जाति से चारण मुन्शी समर्थदान ही ऐसे सहयोगी मिले, जिन्होंने महर्षि के साथ कभी भी धोखा नहीं किया और महर्षि भी मुन्शी पर पूरा विश्वास करते थे। उदयपुर के नवलखा महल में अगस्त १८८२ में लिखा गया सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय संस्करण महर्षि दयानन्द के जीवनकाल में मुन्शी समर्थदान द्वारा सम्पादित हो गया था। परन्तु वह छप कर प्रकाशित होता कि ३० अक्टूबर १८८३ को अजमेर में महर्षि का बलिदान हो गया। पश्चात् दिसम्बर १८८४ को यह ग्रन्थ प्रयाग में वैदिक यन्त्रालय में छपकर विक्रय के लिये जारी हुआ।

प्रारम्भ से लेकर आज तक के समस्त प्रकाशित ग्रन्थों में सत्यार्थप्रकाश शीर्षक से प्रकाशित यह पहला ग्रन्थ है। यह प्रश्न उठता रहा है कि क्या इसका शीर्षक "सत्य प्रकाश" नहीं रखा जा सकता था? नहीं क्योंकि सत्य का प्रकाश करने की सामर्थ्य केवल परमात्मा में है जो सृष्टि के आदि में वेद के रूप में करता है। मनुष्य तो केवल सत्य के अर्थों का प्रकाश करने की सामर्थ्य रखता है। वह सत्य क्या है? ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीन अनादि सत्ताएँ सत्य हैं और इनसे बनी यह सृष्टि और यह संसार सत्य है। सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में महर्षि दयानन्द ने इन्ही सत्य के अर्थों का प्रकाश अर्थात् इस सृष्टि या संसार की व्याख्या सहित मानव और मानव जीवन के समस्त पहलुओं की व्याख्या की है तथा यह बताया है कि मानव इस संसार में कैसे रहे और कैसे उपभोग करे।

सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द सरस्वती की बेजोड़ कृति है। इस ग्रन्थ रत्न ने लाखों के जीवन को बदला है। समस्त सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ जाइये, उसमें एक पृष्ठ भी ऐसा न मिलेगा जिसमें सन्देहों की निवृत्ति न हो। अनेक धार्मिक उलझनों में पड़े व्यक्तियों ने सत्यार्थ प्रकाश से मार्ग तलाशा सत्य को हस्तामलकवत् दिखाने में सत्यार्थ प्रकाश अप्रतिम है। "तमसो मा ज्योतिर्गमय" के प्रार्थी इसे अवश्य पढ़ें, मार्ग मिलेगा। तभी तो स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने कहा था इसी पवित्रतम ग्रन्थ के अध्ययन से मैं पवित्र बना। यह मेरे जीवन का ज्योति स्तम्भ है। पादरी सी.एफ.एण्ड्रयूज के शब्दों में "मैंने भारत आकर सच्चे हिन्दू धर्म का परिचय सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय से पाया है। मैं समस्त सन्देह निवारक इस अमर ग्रन्थ को पढ़ने की सभी सत्यान्वेषियों को प्रेरणा देता हूँ। "सनातन धर्म के एक विद्वान ने बड़ी सुन्दर बात कही थी" कि हमारे अन्दर अविद्या के कारण, अन्धविश्वास, कुरीतियाँ, अवैदिक मान्यताएँ और जहालत रूपी कूड़ा-करकट इकट्ठा हो गया था जिसको महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश और उसके बाद आर्य समाज ने छलनी बन कर यह सब कूड़ा-करकट निकाल कर संसार के सामने हमें सही स्वरूप वैदिक धर्म का दर्शन कराया।"

महर्षि दयानन्द का कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश कुल २० परिच्छेदों में लिखा गया है। जिनमें मुख्य भूमिका - १. समुल्लास - १४, अनुभूमिकाएँ - ४ और अन्त में स्वमन्तव्यामन्वय प्रकाश - १, मुख्य भूमिका में सत्यार्थ प्रकाश लिखने का उद्देश्य और मुख्य परिच्छेद, अध्याय और महर्षि के सम्बोधन में समुल्लास सम + उल्लास अर्थात् एक समान उल्लास, प्रसन्नता या किसी भी विषय की व्याख्या करने, खण्डन-मण्डन अथवा समीक्षा करने में एक जैसा प्रसन्न भाव रखा गया है, लेशमात्र भी कोई पक्षपात, कोई नाराजगी, अन्यथा भाव या पूर्वग्रह युक्त होकर नहीं लिखा गया है अपितु संसार के उपकारार्थ मानव-मानव मिलकर रहें के उद्देश्य से विषय क्रमानुसार तर्क और युक्ति पूर्ण ढंग से यह सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ लिखा गया है।

महर्षि इस ग्रन्थ की भूमिका में लिखते हैं "कि मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उस को सत्य और जो मिथ्या है उस को मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाये। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्ष-पाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है इसलिये वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन को सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी कोई बात नहीं रखी है और न ही किसी का मन दुखाना व किसी की हानि पर तात्पर्य है किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।"

"सर्वथा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य ही से विद्वानो का मार्ग विस्तृत होता है, इस दृढ़ निश्चय के आलम्बन से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थ प्रकाश करने से नहीं हटते। गीता का यह वचन बड़ा दृढ़ निश्चय है कि जो-जो विद्या और धर्म प्राप्ति के कर्म है वे प्रथम करने में विषय के तुल्य और पश्चात् अमृत के सदृश होते हैं ऐसी बातों को चित्त में धर के मैंने इस ग्रन्थ को रचा है।"

(शेष पृष्ठ २१ पर)

Date: 27-10-2013

మహర్షి దయానంద సరస్వతి (యుగవిధాత తత్వవేత్త)



Feb. 1824

Nov. 1883

Arya Jeevan

4

Date: 27-10-2013

చిత్రకథ

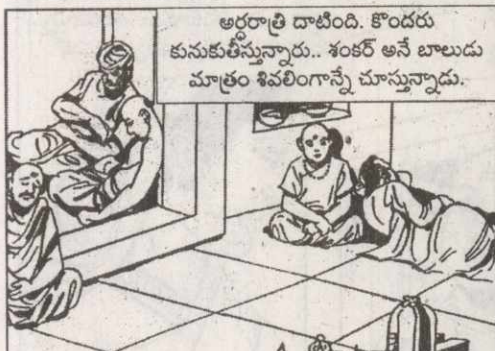
స్వామి దయానంద సరస్వతి

1



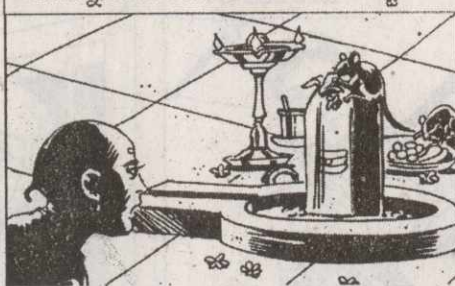
మూడ నమ్మకాలతో, అజ్ఞానంతో ఉన్న జాతిని మేల్కొల్పి, దేశాన్ని ఆధునికత, అభ్యుదయాల వైపుకు నడిపించిన వారిలో స్వామి దయానంద సరస్వతి అగ్రగణ్యుడు. మతం పేరుతో జరిగే దోపిడికి వ్యతిరేకంగా ఆయన పోరాడాడు. జాతి, కుల, మత, వర్గ వివక్షలతో కుసార్లుతున్న ప్రజలను మేల్కొల్పి- "మేల్కొండి.. లేవండి.. ఆగకండి.." అంటూ గర్జించాడు. స్త్రీలకు సాధికారత, విద్య అత్యవసరమని భావించాడు. వేదాలు అవిచ్ఛిన్నమైన జ్ఞాన బాండాగారాలనే నమ్మకంతో వాటిలోని అంశాలను అందరికీ వివరించేందుకు- "సత్యార్థ ప్రకాశిక" అనే గ్రంథాన్ని రచించాడు. దేశ ప్రజలను జాగృతం చేసేందుకు- ఆర్య సమాజాన్ని సాపేంది, దేశం నాలుగు చెరగుల దాని శాఖలను విస్తరింపచేసి అవిరళ కృషి చేసిన దేశ నవయుగ వైతాళికుడు.

గుజరాత్ లో తంకారా అనే మారుమూల గ్రామం. ఆ రోజు శివరాత్రి. దాంతో అందరూ శివాలయం దగ్గర గుమ్మిగూడారు.



అరరాత్రి దాటింది. కొందరు కునుకుతీస్తున్నారు.. శంకర్ అనే బాలుడు మాత్రం శివలింగాన్నే చూస్తున్నాడు.

ఇంతలో కలుగులో నుంచి ఒక ఎలుక వచ్చింది. శివలింగం మీదున్న అరటిపండును కొరకటం మొదలుపెట్టింది.



శివుడు అంత శక్తిమంతుడు కదా.. ఒక చిట్టెలుక తన మీదకెక్కి అరటి పండు తింటుంటే ఏం చేయలేదా?



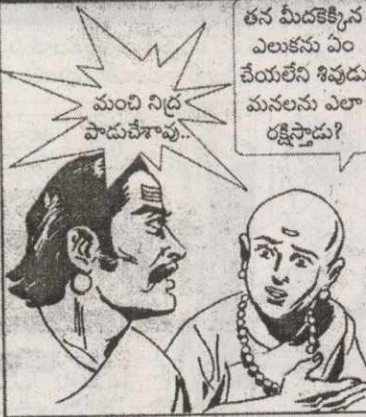
చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

2

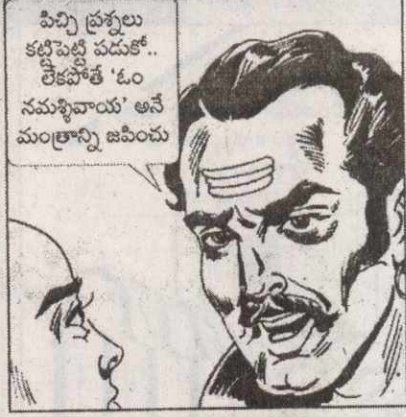


నాన్నగారూ! లేవండి.. నా సందేహం తీర్చండి..

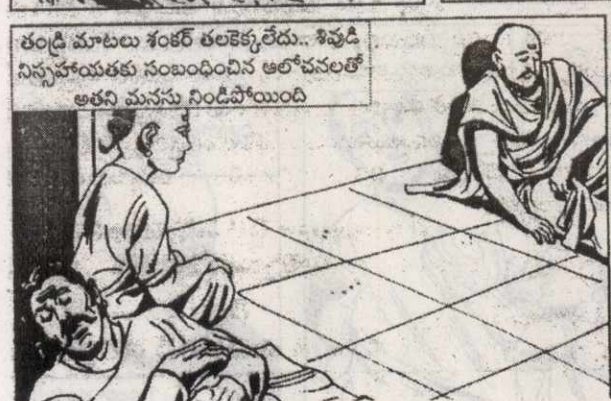


మంచి నిద్ర పాడుకోవా..

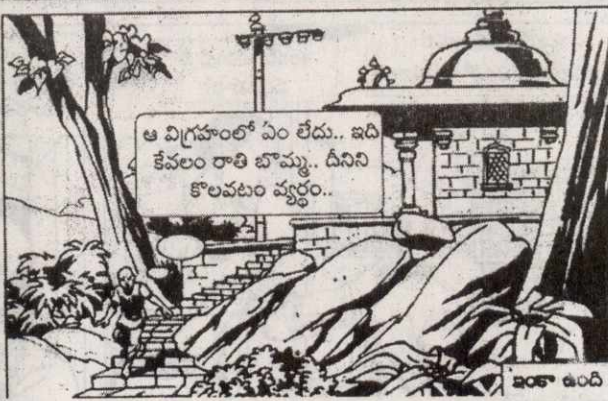
తన మీదకెక్కిన ఎలుకను ఏం చేయలేని శివుడు మనలను ఎలా రక్షిస్తాడు?



పిచ్చి ప్రశ్నలు కట్టిపెట్టే పడుకో.. లేకపోతే 'ఓం నమశ్శివాయ' అనే మంత్రాన్ని జపించు



తండ్రి మాటలు శంకర్ తలకెక్కిలేదు.. శివుడి నిస్సహాయతకు సంబంధించిన ఆలోచనలతో అతని మనసు నిండిపోయింది



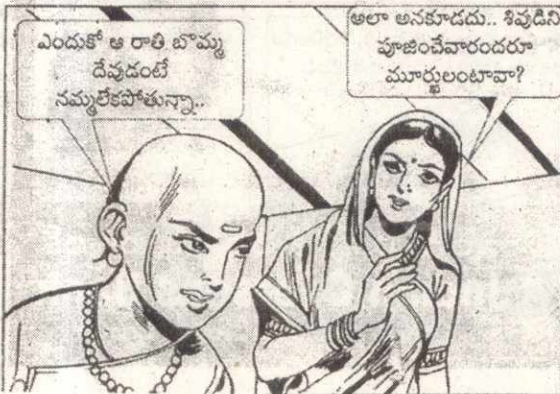
ఆ విగ్రహంలో ఏం లేదు.. ఇది కేవలం రాతి బొమ్మ.. దీనిని కొలవటం వ్యర్థం..

ఇంకా ఉంది

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

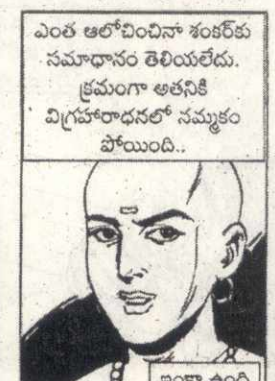
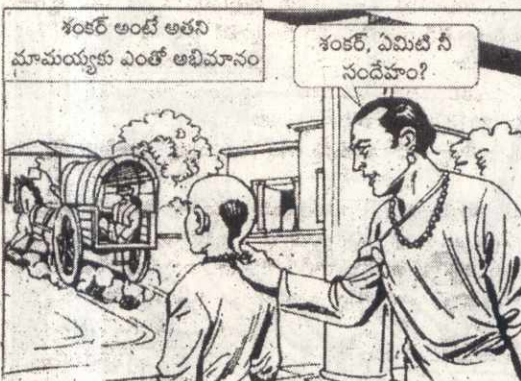
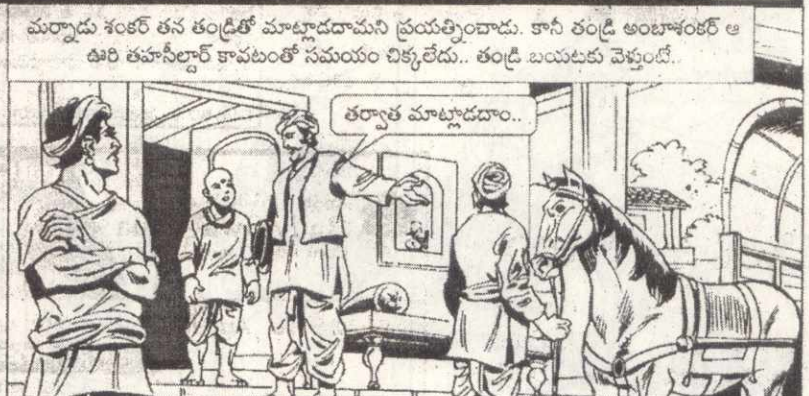
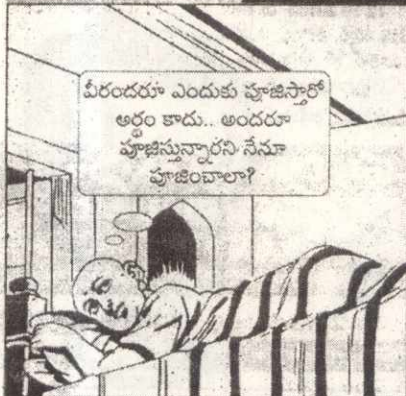
3

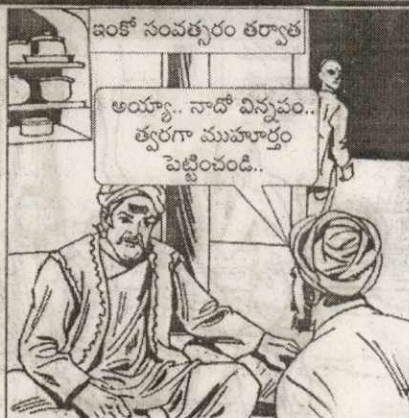
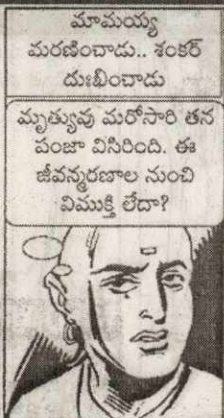
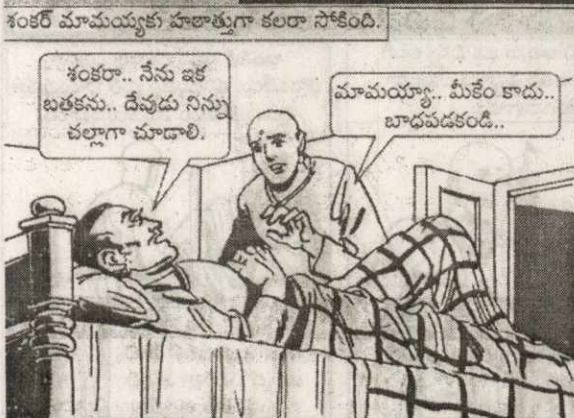
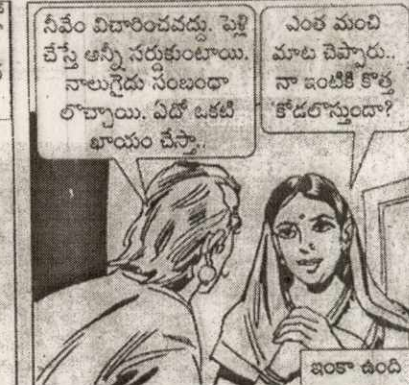
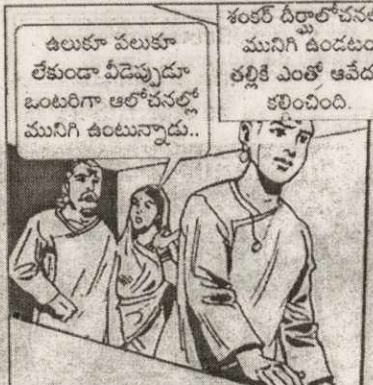
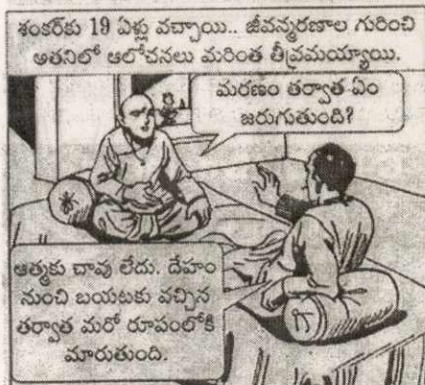
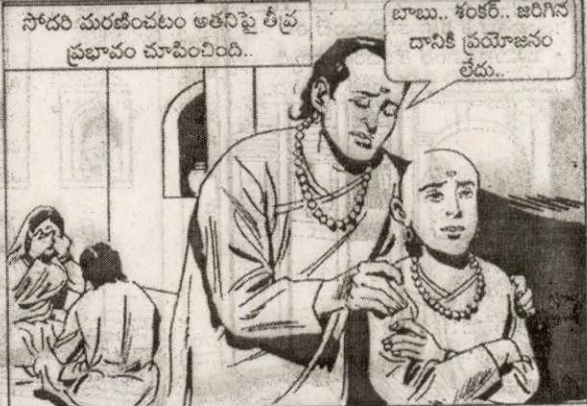
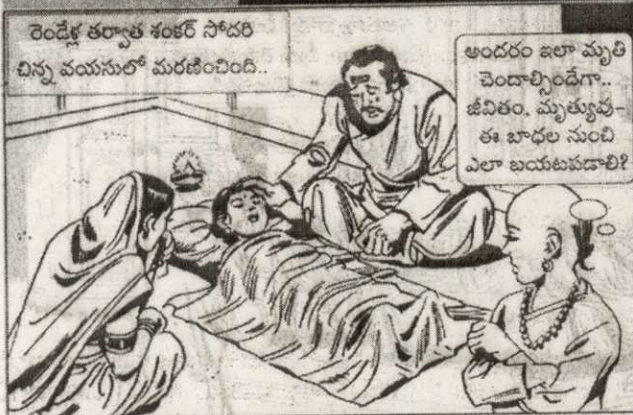


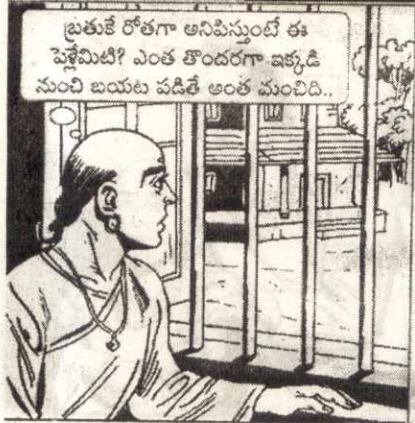
చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

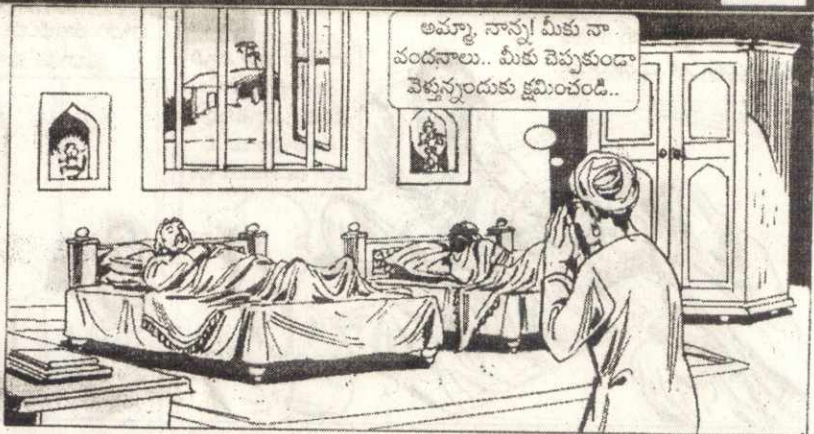
4







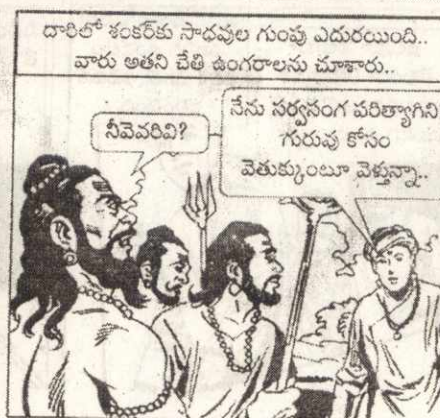
బ్రతుకే రోతగా అనిపిస్తుంటే ఈ పెళ్ళేమిటి? ఎంత తొందరగా ఇక్కడి నుంచి బయట పడితే అంత మంచిది..



అమ్మా, నాన్న! మీకు నా పందనాలు.. మీకు చెప్పుకుండా వెళ్తున్నందుకు క్షమించండి..



ఎవరూ చూడకుండా తప్పించుకోవాలి. ఎవరైనా చూస్తే నాన్నగారికి చెబుతారు..



దారిలో శంకర్ కు సాధవుల గుంపు ఎదురయింది.. వారు అతని చేతి ఉంగరాలను చూశారు..

నీవెవరివి?

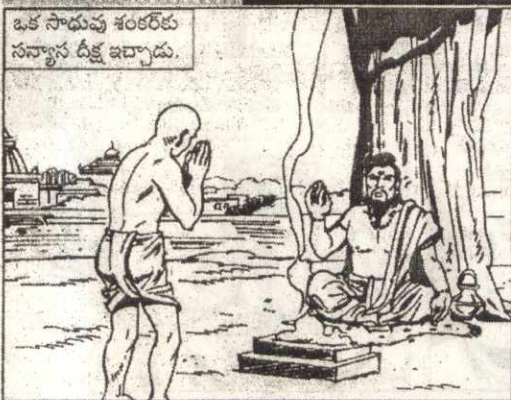
నేను సర్వసంగ పరిత్యాగిని! గురువు కోసం వెతుక్కుంటూ వెళ్తున్నా..



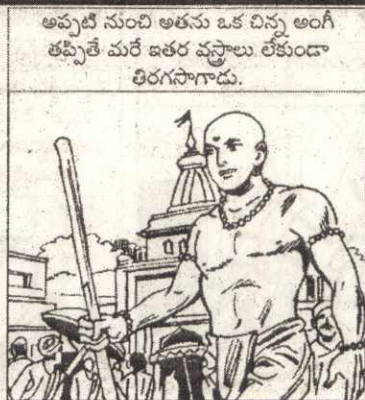
అయితే ఆ బంగారం ఎందుకు? మాకిచ్చేయ్..

సరే.. తీసుకోండి..

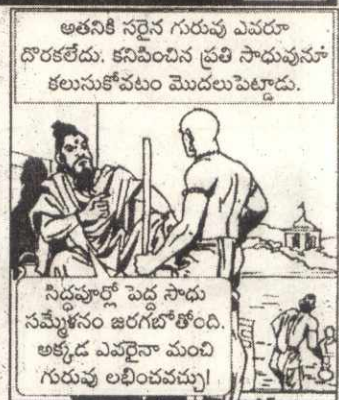
ఇంకా ఉంది



ఒక సాధువు శంకర్ కు సన్మాన దీక్ష ఇచ్చాడు.

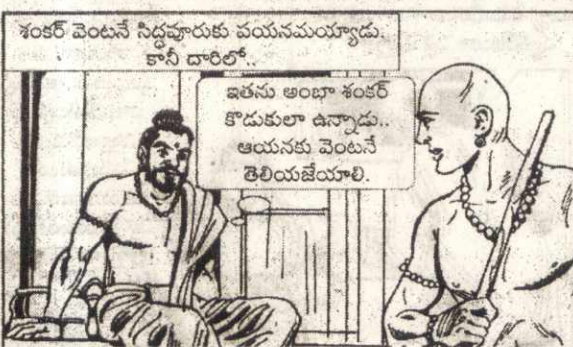


అప్పుటి నుంచి అతను ఒక చిన్న అంగీ తప్పితే మరే ఇతర వస్త్రాలు లేకుండా తిరగసాగాడు.



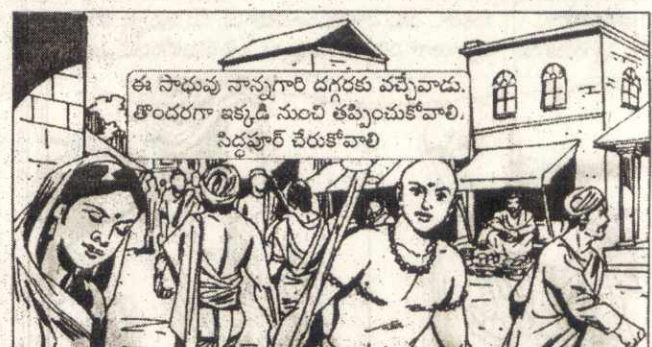
అతనికి సరైన గురువు ఎవరూ దొరకలేదు. కనిపించిన ప్రతి సాధువునూ కలుసుకోవటం మొదలుపెట్టాడు.

సిద్ధపూర్లో పెద్ద సాధు సమ్మేళనం జరగబోతోంది. అక్కడ ఎవరైనా మంచి గురువు లభించవచ్చు!



శంకర్ వెంటనే సిద్ధపూరుకు వయనమయ్యాడు. కానీ దారిలో..

ఇతను అంభా శంకర్ కొడుకులా ఉన్నాడు.. ఆయనకు వెంటనే తెలియజేయాలి.



ఈ సాధువు నాన్నగారి దగ్గరకు వచ్చేవాడు. తొందరగా ఇక్కడి నుంచి తప్పించుకోవాలి. సిద్ధపూర్ చేరుకోవాలి

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

9

ఒక రోజు అతను శివాలయంలోకి ప్రవేశిస్తుండగా..

అదిగో శంకర్.. నాదువు చెప్పింది నిజమే..

శంకరా.. నీకేమయింది.. పిచ్చిపేషాలు చాలు.. వెంటనే ఇంటికి వెళ్దాం పదా..

గదిలో నుంచి శంకర్ పారిపోకుండా చూడండి.. రేపు ఉదయం బయలుదేరుదాం..

ఇక్కడి నుంచి తప్పించుకోగలనా? నా సన్యాసి జీవితం అంతమయినట్లే..

అదృష్టవశాత్తూ కాపలాదాడు నిద్రలోకి జారుకున్నారు.

వాళ్లు నిద్రలేవక ముందే ఇక్కడి నుంచి ఉడాయించాల్సి..

ఇంకా ఉంది

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

10

కాపలావారి దగ్గర గుర్రాలున్నాయి.. నేను ఎంత దూరం వెళ్ళినా పట్టుకోగలరు. నేను ఈ చెట్టిక్కి కొమ్మల మధ్య దాక్కినటం మంచిది.

ఇంతలో ఒక కాపలావాడు లేచాడు.. మిగిలిన వారిని లేపాడు

లే..లే.. తునుకు పట్టేసింది. బాబు ఏం చేస్తున్నాడో చూద్దాం..

శంకర్ కనబడకపోయేసరికి అతనిని వెతికేందుకు గుర్రాల మీద బయలుదేరారు.

ఒక రోజుంతా గడిచింది.. కాపలాదాడు చాలా దూరం వెళ్ళి ఉంటారు.

ఆ తర్వాత శంకర్ అహ్లాదాబాద్, బరోడా మొదలైన ప్రాంతాలు తిరిగాడు.

ఇంకా ఉంది

చిత్రకథ

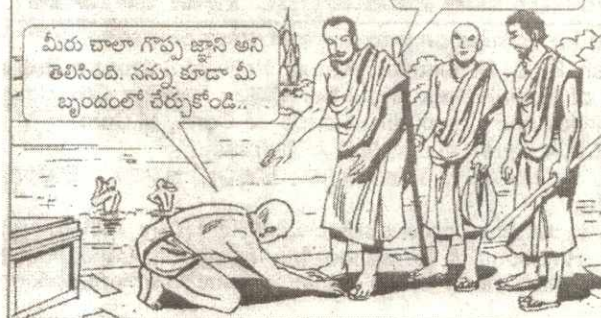
స్వామి దయానంద సరస్వతి

11

ఒక రోజున నర్మదా నది ఒడ్డున పూర్ణానంద స్వామి బృందం ఆతనికి ఎదురయింది.

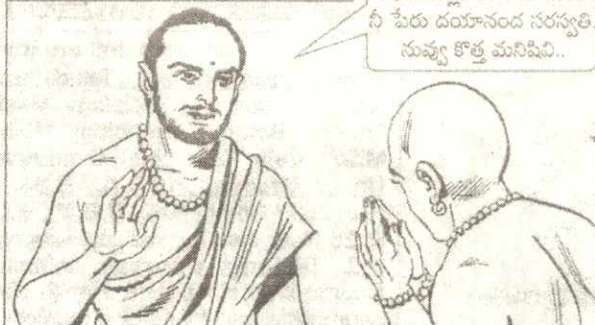
కానీ నువ్వు ఇంకా చాలా చిన్నవాడివి..

మీరు చాలా గొప్ప జ్ఞాని అని తెలిసింది. నన్ను కూడా మీ బృందంలో చేర్చుకోండి..



చాలా చర్చ జరిగిన తర్వాత పూర్ణానంద అతనిని తన శిష్యుడిగా చేర్చుకున్నారు.

నేటితో నీకు పునర్జన్మ లభించినట్లే. ఈ రోజు నుంచి నీ పేరు దయానంద సరస్వతి. నువ్వు కొత్త మనిషివి..



పూర్ణానంద రెండేళ్ల పాటు దయానందకు వేదాలు, ఉపనిషత్తు సారాంశం బోధించారు.



ఆ తర్వాత దయానంద కాశీ వెళ్లి యోగా నేర్చుకున్నాడు.

యోగాభ్యాసంతో నిరుపేదలకు ఏం మేలు జరుగుతుంది?



దారికి అడ్డు తొలగండి.. ఈ బిక్షగాళ్లు పెద్ద పేదగా తయారయ్యారు. దేవుడి దగ్గరకు వెళ్లినాయకుండా అడ్డుపడుతూ ఉంటారు.



ఇంకా ఉంది

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

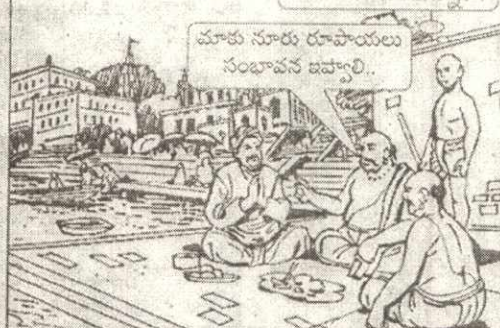
12

బిచ్చగాళ్ల దైన్యానికి, వారి పట్ల ధనవంతుల అసహనానికి దయానంద ఎంతో విచారించాడు.



ఈ పురోహితులు భక్తులను ఎలా దోచుకుంటున్నారో?

మాకు నూరు రూపాయలు సంభావన ఇవ్వాలి..

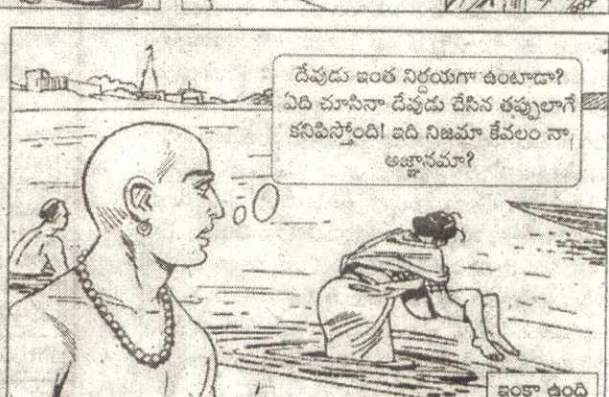


నీకెంత ధైర్యంరా.. రోచలికి వచ్చి ఈ నేలను అవఏత్రం చేస్తావా?

చనిపోయిన కుక్క కోరికలం తీసి బయటకు పట్టుకుపోవచ్చని నాకు కబురుచేశారు. స్వామీ!



ఎంత దయనీయమైన స్థితి.. ఆ స్త్రీ చనిపోయిన పిల్లవాడికి కప్పైన దుప్పట తీసేస్తోంది..



దేవుడు ఇంత నిత్యంగా ఉంటాడా? ఏది చూసినా దేవుడు చేసిన కష్టాలాగే కనిపిస్తోంది! ఇది నిజమా కేవలం నా అజ్ఞానమా?

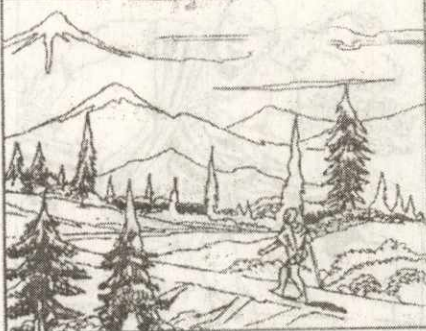
ఇంకా ఉంది

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

13

జ్ఞానాన్వేషణలో దయానంద హిమాలయాల దాకా వెళ్లాడు



మంచుకొండల మధ్య తిరుగుతూ ఉన్నాడు. తినటానికి ఏం దొరకలేదు. ఒక రోజు ఆకలి తట్టుకోలేక మంచుగడ్డలను తినబోయాడు



కాని మూర్ఖపోయాడు



© 2005 www.sarvasatyaonline.com

కొద్ది సేవటికి మెలకువ వచ్చింది. అక్కడ ఉన్న పర్వతం అంచుకు చేరుకున్నాడు

ఇక్కడి నుంచి దూకి మరణించటం అన్నింటికన్నా ఉత్తమం. ఎంత తిరిగినా జానోదయం, లభించటం లేదు. జీవించి లాభం లేదు..

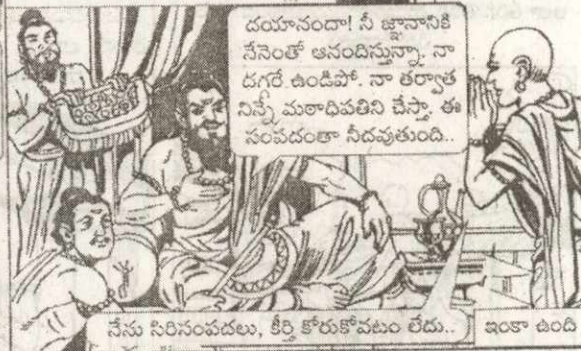


దూకేయబోయాడు. కాని మరో ఆలోచన వచ్చింది

బ్రతికి ఉంటే కొద్ది మంది దుఃఖమైనా తొలగించేందుకు ఈ దేహాన్ని వినియోగించవచ్చు. ముందు ఒక గురువును కనుగొనాలి..



అలా తిరుగుతూ ఒక మఠానికి వెళ్లాడు



దయానందా! నీ జ్ఞానానికి నేనెంతో ఆనందిస్తున్నా. నా దగ్గరే ఉండిపో. నా తర్వాత నీన్నే మఠాధిపతిని చేస్తా. ఈ సంవదంతా నీదవుతుంది..

నేను నిరసనపడటం, కీర్తి కోరుకోవటం లేదు.. ఇంకా ఉంది

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

14

అలా అన్వేషణ కొనసాగిస్తుండగా..

స్వామీజీ, గ్రామం అవతల సాధుసమ్మేళనం జరుగుతోంది. మీరు కూడా వచ్చి సందేశం ఇవ్వాలి.

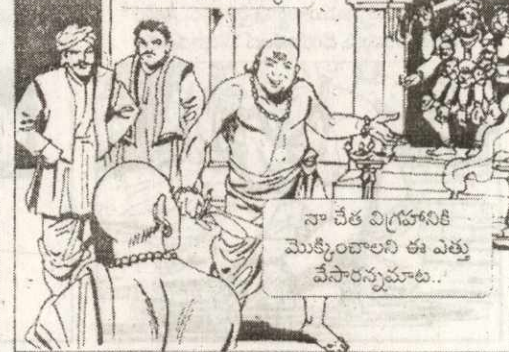


ఆ గుడి దాటే కొంచెం ముందుకు పోవాలి..



నన్నక్కడికి తీసుకువెళ్తున్నారు?

దయానంద, రా! కాళీదేవికి మొక్కు



నా చేత విగ్రహానికి మొక్కించాలని ఈ ఎత్తు వేసారన్నమాట..



మొక్కుతావా? లేకపోతే చంపేయనా?



నేనీ రాయికి మొక్కును..

ఇంకా ఉంది

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

15

పట్టుకోండి... దయానంద ప్రాణాలలో బయటకు పోకూడదు.

దయానంద వేగంగా పరుగెత్తి గోడ మీదకు ఎగబాడాడు.

దయానంద తప్పించుకొని పారిపోసాగాడు.

అలా తిరిగి తిరిగి మదురలోని వృజానందాశ్రమం చేరుకున్నాడు.

నేను వేదోపనిషత్తులన్నీ అధ్యయనం చేశాను. యోగాభ్యాసం చేశాను. బాషను, వ్యాకరణాన్ని అధ్యయనం చేశాను. అయినా నా జ్ఞానశృష్టి తీరలేదు. మీ దగ్గరకు వచ్చాను.

ముందు ఆ పుస్తకాలన్నీ యమునలో వదిలి రా!

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

16

ఆ రోజుల్లో కేవలం వ్రాతప్రతులే ఉండేవి. అందువల్ల వాటికి చాలా విలువ ఉండేది. అయినా తన వద్ద ఉన్న అమూల్య పుస్తకాలను నీటిలో వదిలేసింది కు దయానంద వెనకాడలేదు.

నర్మ జ్ఞానానికి వేదాలే ఆధారాలు. ప్రపంచంలోని దుఃఖానికి, వేదనకూ అజ్ఞానమే మూల కారణం.

దయానంద తన గురువుకు రకరకాల సేవలు చేయసాగాడు.

ఆశ్రమం కూడా ఊడ్చేవాడు.

అయినా కొన్నిసార్లు గురువుకు కోపం వచ్చేది. దయానందుడిని కొట్టేవాడు.

ఆయనకు నా మీద కోపం లేదు. నన్ను పరీక్షించటానికే ఇలా కొడుకున్నాడు.

ఇంకా ఉంది

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

17

3000 సంవత్సరాల తర్వాత..

నీవు నేర్చుకోవాల్సిందంతా నేర్చుకున్నావు. నీవు బయటకు వెళ్లి ఇతరులకు బోధించవచ్చు..



గురుదక్షిణ ఇవ్వటానికి దయానంద దగ్గర ఏమీ లేదు. గురువు గారికి లవంగాలంటే ఇష్టం..

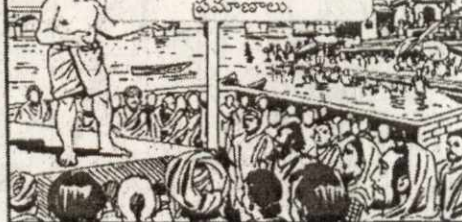
అయ్యో! మీకు గురుదక్షిణగా ఇచ్చేందుకు ఈ లవంగాలు తప్ప మరేమీ లేవు.

దయానందా! వేదనామయ లోకానికి వేదాల సారాన్ని తెలియజేయి.. అదే నువ్వు నాకు ఇచ్చే గురుదక్షిణ.

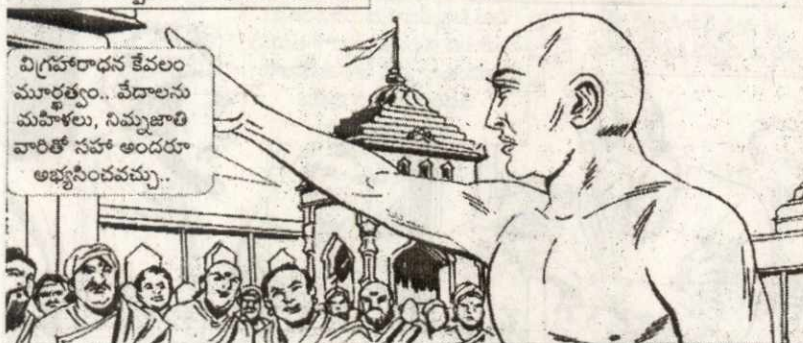


గురు ఆజ్ఞను పాటించి దయానంద మధుర నుంచి ఆగ్రా వెళ్లాడు. మొదటి ఉపన్యాసం ఇచ్చాడు.

మిత్రులారా! ఈ ప్రపంచంలో నిజమైన జ్ఞానానికి వేదాలే ప్రమాణాలు.



1887లో హరిద్వార్‌లో కుంభమేళా జరిగింది.



విగ్రహారాధన కేవలం మూర్ఖత్వం.. వేదాలను మహాశిలు, నిమ్మజాతి వారితో సహా అందరూ అభ్యసించవచ్చు..

దయానందుడు అలా అంటాడేమిటి? విగ్రహారాధన మూర్ఖత్వం ఎలా అవుతుంది?

వీడికెంత కండకావరం.. స్త్రీలకు, నిమ్మజాతి వారికి వేదాధ్యయనం హక్కు ఉందంటాడా?



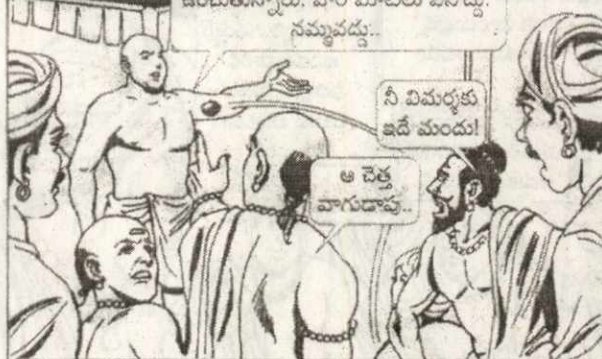
ఇంకా ఉంది

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

18

మత బోధకులంతా మిమ్మల్ని అజ్ఞానంలో ఉంచుతున్నారు. వారి మాటలు వినొద్దు. నమ్మవద్దు..



నీ విమర్శకు ఇదే మందు!

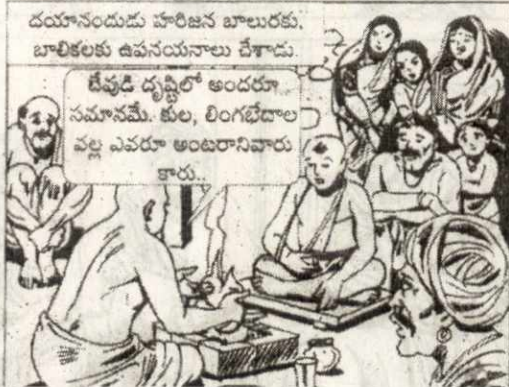
ఆ చెత్త వాగుడా..

రాళ్లు పడుతున్నా దయానంద లెక్కవేయలేదు. ప్రసంగం కొనసాగించాడు.



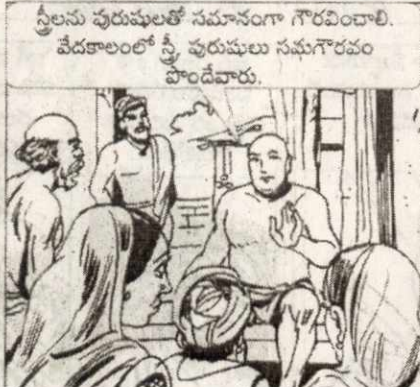
అతడికెంత ధైర్యం!

దయానందుడు హరిజన బాలురకు, బాలికలకు ఉపనయనాలు చేశాడు.

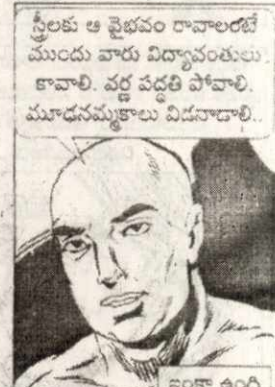


దేవుడి దృష్టిలో అందరూ సమానమే. కుల, లింగభేదాల వల్ల ఎవరూ అంటరానివారు కారు..

స్త్రీలను పురుషులతో సమానంగా గౌరవించాలి. వేదకాలంలో స్త్రీ పురుషులు సమగౌరవం పొందేవారు.



స్త్రీలకు ఆ చైతన్యం రావాలంటే ముందు వారు విద్యావంతులు కావాలి. వర్త పద్ధతి పోవాలి. మూఢనమ్మకాలు విడనాడాలి..



ఇంకా ఉంది

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

19

మీరు లేకపోతే అగ్రవర్ణాల వారు ఎలా బతుకుతారు? ఒక్కసారి ఆలోచించండి.. మీరు వాళ్ళ భూములు దున్నుతారు. వారి ఉచ్చిష్టలన్నీ ఎత్తి అవతల పారబోస్తారు.. మీరు కాదు.. వాళ్ళే అస్సపృశ్యులు..



అనుషాహర్లో సనాతనులకు అతడి మీద బాగా కోపం వచ్చింది. ఒక రోజున..



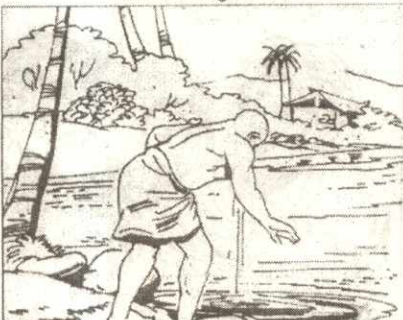
మీరు సరస్వతి.. మీ మీద గౌరవంతో నేనిచ్చే ఈ చిరుకానుక తీసుకోండి..

క్లిష్టిలో విషం కలిపారు..

ఇదేమిటి.. తల తిరుగుతోంది..



కానీ దయానంద యోగక్షేత్రో కడుపులోనిదంతా బయటకు కక్కిశాడు.



ఆ ఊరి తహసీల్దార్ క్లిష్టి ఇచ్చిన వ్యక్తిని పిలిపించాడు.

నీకు సిగ్గులేదా? దయానందను చంపాలని ప్రయత్నిస్తావా? ఆయన ఎవరనుకున్నావు? హిందుమతాన్ని ఉద్ధరించటానికి పుట్టిన మహానుభావుడు!



ఇంకా ఉంది

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

20

నయ్యడే గారూ! అతనిని శిక్షించండి.. నేను ప్రజలను విముక్తులను చేయటానికి వచ్చాను.. వారిని బంధీలు చేయటానికి రాలేదు.



రోజురోజుకూ దయానందకు ఆదరణ పెరగటం మొదలుపెట్టింది. దీనితో సనాతన హిందువుల్లో అలజడి ప్రారంభమయింది. సనాతనులందరూ నమోజేమయ్యారు..



దయానంద హిందూ వ్యతిరేక ప్రచారానికి అడ్డుకట్ట వేయాలి..

అతడిపై చచ్చి తీసుకోమని గవర్నర్ జనరల్ వారికి పిర్యాదు చేసినా చిలువ లేకుండా పోయింది..

దీనికి ఒక్కటే పరిష్కారం. హిందూ విజ్ఞానానికి ప్రతీక అయిన కాశీలోని సందితులు తలుచుకుంటే దయానందను తమ జ్ఞాన పటిమతో చిక్కుచేయగలరు..



అది నిజమే! కాశీ పండితుల చేతిలో చిత్తయితే మరి తిరిగి కోలుకోలేదు..



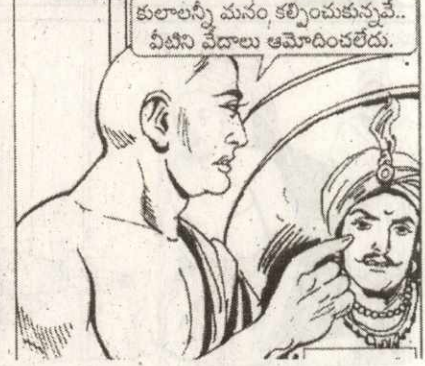
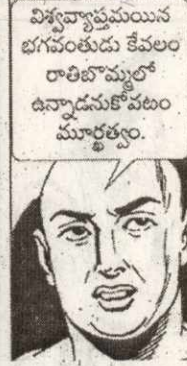
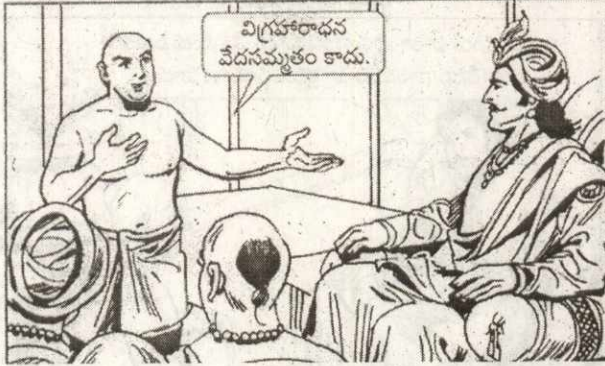
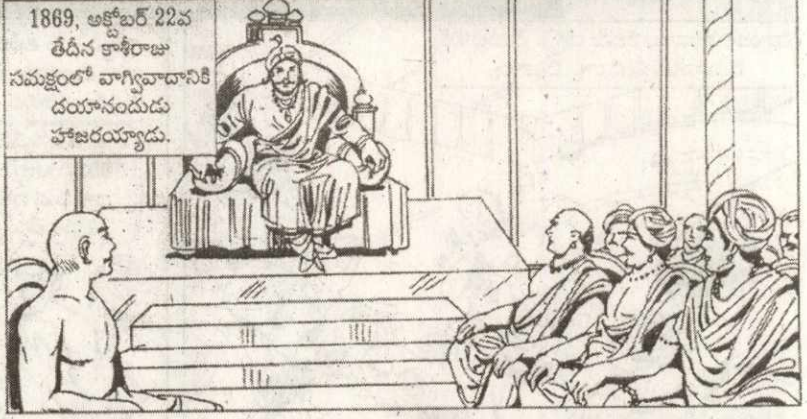
కాశీ పండితులను కలిసి వాగ్వివాదానికి దయానందను పిలువమని కోరడం..



చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

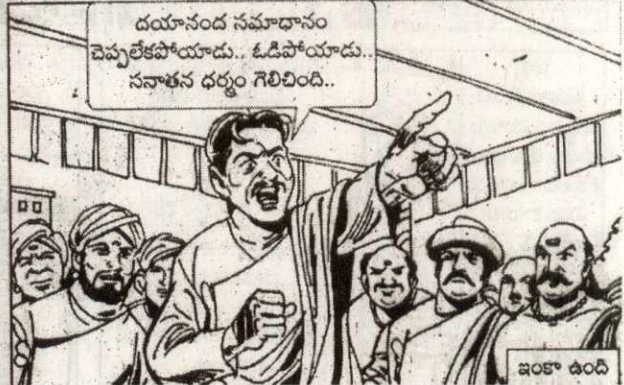
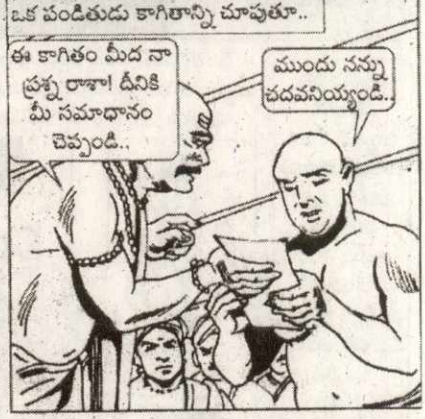
21



చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

22



చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

23

కిరాయి గూండలు నభను బంగ్లా చేయటానికి దయానంద మీద రాళ్లు విసిరారు.



స్వామీ, మీ తలకు గాయమయింది. ఇది సహించరానిది.

వాళ్లు చేస్తున్నదేమిటో తెలియని అజ్ఞానులు. వాళ్ల మీద నాకేం కోపం లేదు..



తర్వాత కాశీ ముఖ్య పండితులైన తారాచరణ్, తారకరత్న, బాలశాస్త్రి దయానందను కలిసారు.

స్వామీ! మీరు చెప్పింది అక్షరాలా సత్యం. కానీ సంప్రదాయాన్ని కాదనే ధైర్యం మాకు లేదు..



దయానందను రాజు ఆహ్వానించాడు.



స్వామీ! మీరు చాలా జ్ఞాన సంపన్నులు. మీ మీద పగబట్టి దాడి చేసిన వారిని కూడా క్షమించగలిగిన వారు..



ఇంకా ఉంది.

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

24

స్వామ్యానికి, సత్యానికి కట్టుబడిన ఒక యువపుంగవుడు మన మధ్యకు వచ్చాడు. ఆయన గొప్ప సాంఘిక సంస్కర్త కూడా. నిజానికి ఆయనే ఒక దైవ స్వరూపం.

దీనిలో దయానంద కీర్తి ప్రతిష్ఠలు దేశం నలుమూలలా వ్యాపించాయి. ప్రతిచోట ప్రజలు దయానందకు బ్రహ్మరథం పట్టారు. కోల్కతాలో ఒక సభలో కేశవ చంద్రసేన్..



స్వామీ, మీరు ఆందరిలా యున్నట్లు దరించండి. సంస్కృతంలో కాకుండా హిందీలో మాట్లాడండి.. మీ సందేశం దేశమంతా వినగలుగుతుంది..



ఆర్య సమాజముంటే విజ్ఞుల సమాజం. కులమత భేదాలు లేకుండా ఆందరూ ఏకం కావాలి.

1875, ఏప్రిల్ 10వ తేదీన దయానంద ఆర్య సమాజాన్ని స్థాపించాడు.

విదేశీ పాలన నుంచి విముక్తులు కావటం, సాంఘిక సమానతను నెలకొల్పటం, నిజంగా విజ్ఞానవంతులు కావటం మన లక్ష్యాలు!

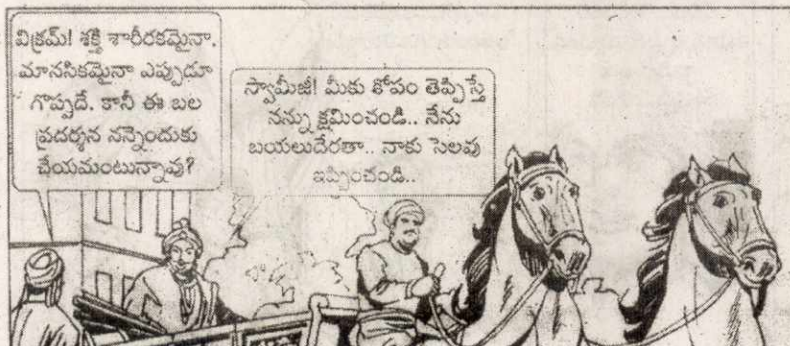
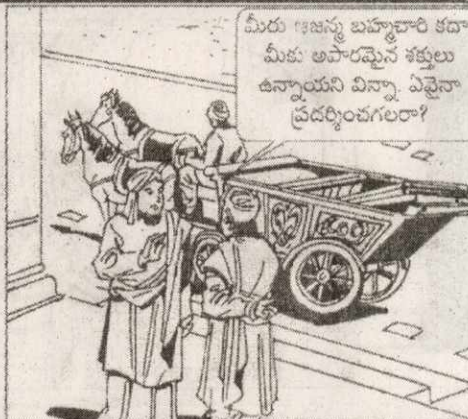
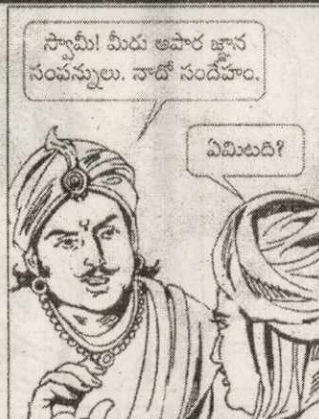
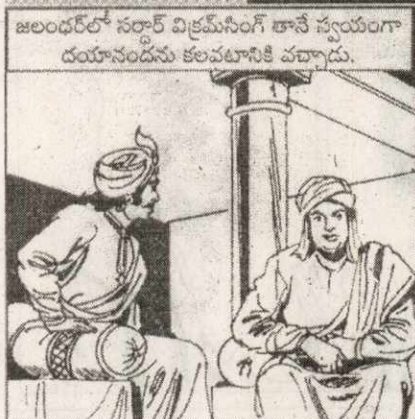
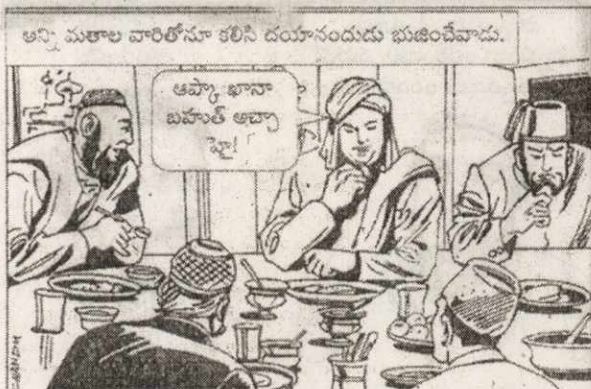
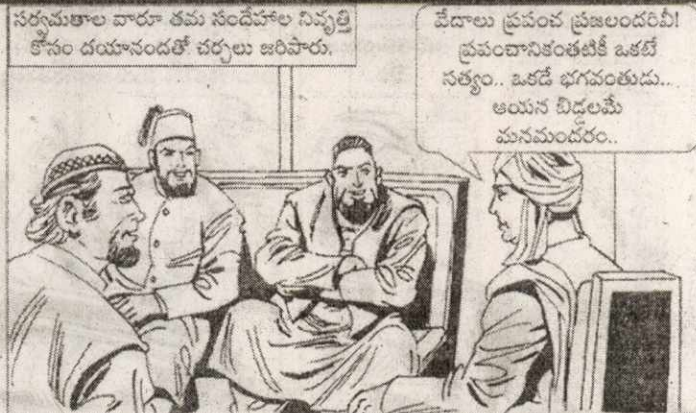
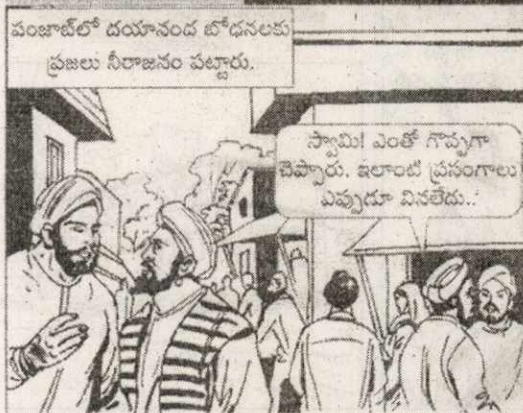


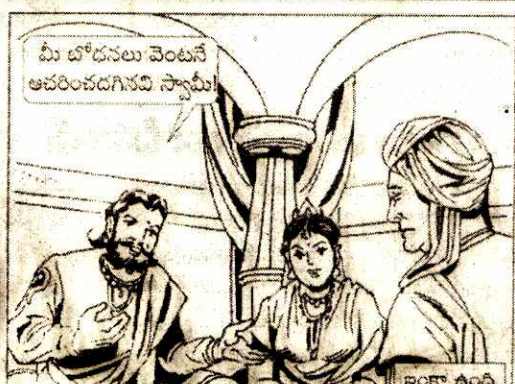
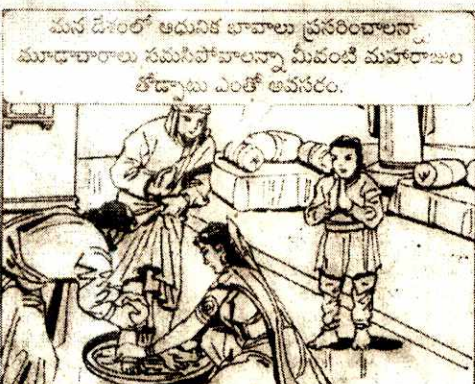
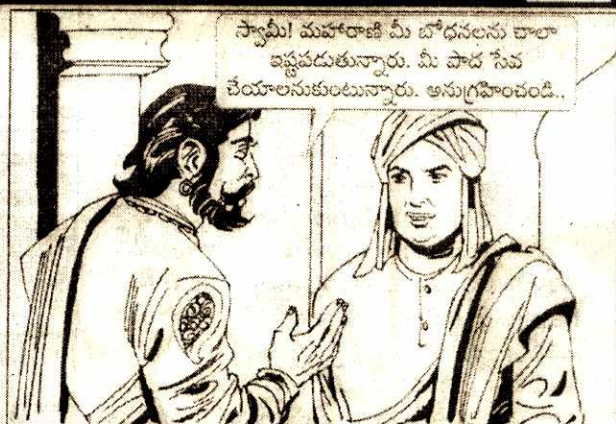
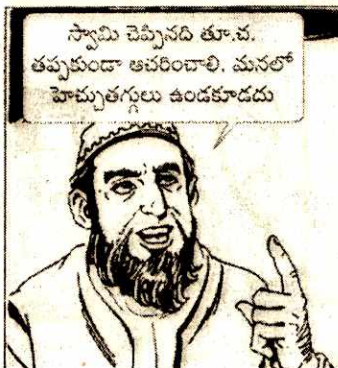
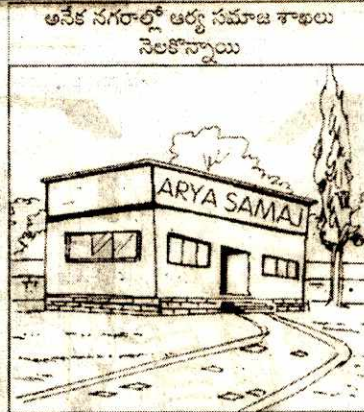
ఆ సంవత్సరం దయానంద సర్వార్థ ప్రభాకర్ అనే గ్రంథాన్ని రాశాడు.. అన్ని వేదాల సారాంశాన్ని దానిలో తేటతెల్లం చేశాడు.



సోదరులారా! మేల్కొనండి! మీకెంతో గొప్ప గతం ఉంది. దాని పైరబట్టే నేటిని తీర్చిదిద్దుకోవాలి. భవిష్యత్తును బంగారుమయం చేసుకోవాలి. ప్రాచీన విజ్ఞానాన్ని చీదరించుకోనే విజ్ఞానాన్ని నిరసించండి!



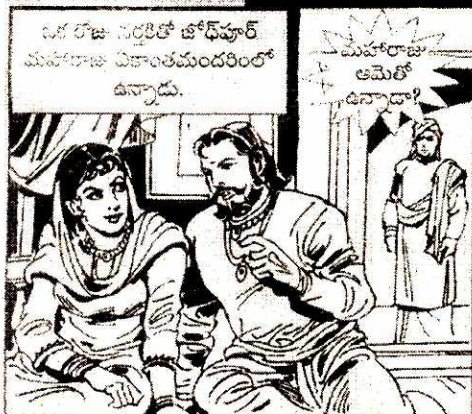




చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

29



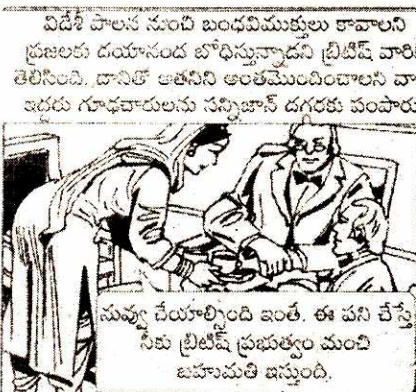
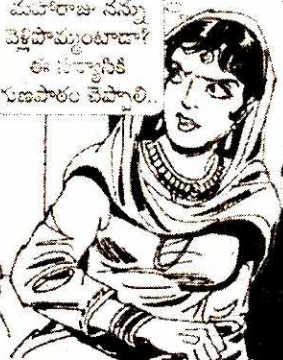
ఈ రోజు సర్దికో జోధ్పూర్ మహారాజు విశాలమండలిలో ఉన్నారు.

మహారాజు ఆమెతో ఉన్నాడా?



సర్దిజాన్.. ఇత సువేత్త..

ఈ సన్మాన కోసం మహారాజు నన్ను వెళ్ళిపోయింటాడా? ఈ సన్మానానికి గుణపాఠం చెప్పాలి.



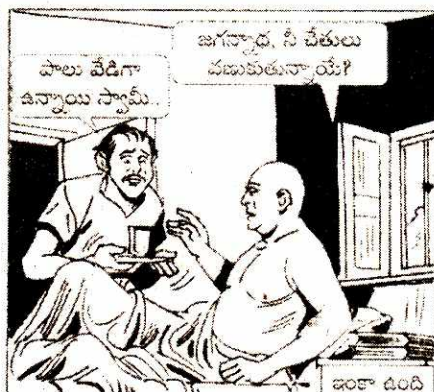
విడిచి పొలన నుండి బంధవిముక్తులు కావాలని ప్రజలకు దయానంద బోధిస్తున్నాడని బ్రిటిష్ వారికి తెలిసింది. దానితో ఆతనిని అంతమొందించాలని వారు ఇదరు గూఢచారులను సర్దిజాన్ దగరకు పంపారు.

నువ్వు చేయాలింది ఇంత. ఈ పని చేస్తే నీకు బ్రిటిష్ ప్రభుత్వం మంచి బహుమతి ఇస్తుంది.



స్వామికి ఇచ్చే పాతలో గాజురజను కలుపు.

అలాగే!



పాలు వేడిగా ఉన్నాయి స్వామీ.

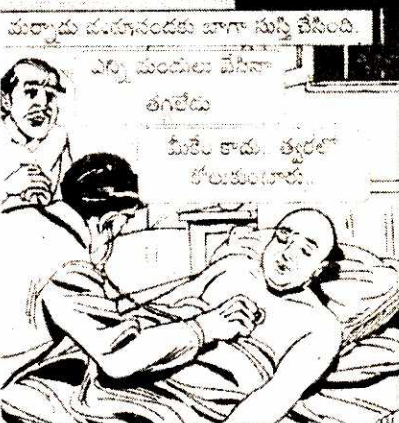
జగన్నాథ, నీ చేతులు వణుకుతున్నాయే?

ఇంకా ఉంది

చిత్రకథ

స్వామి దయానంద సరస్వతి

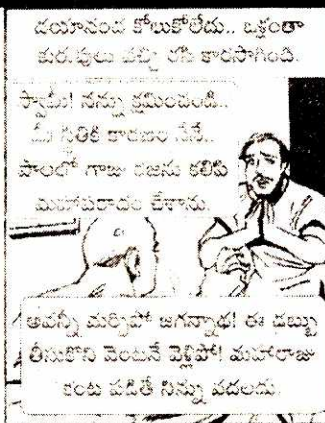
30



మర్నాడు దయానందకు బాగా సుస్తి చేసింది.

ఎన్ని మంచులు వేసినా తగలేదు

మీరే కాదు, త్వరలో కోలుకుంటాడు.

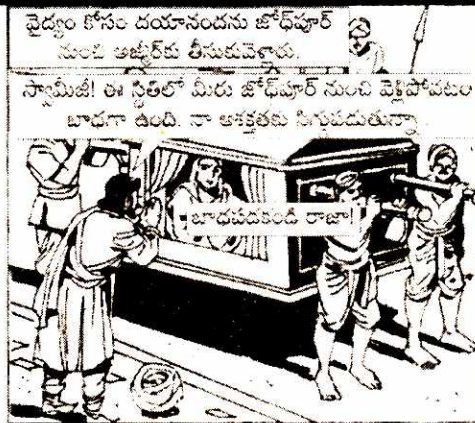


దయానంద కోలుకోలేదు.. ఒక్కండా కుర్రాడు వచ్చి రోజు కాదసాగింది.

పొద్దు! నన్ను క్షమించండి.. మీ స్థితికి కారణం నేనే.

పొద్దు! గాజు రజను కలిపి మహారాజుకు చేశాను.

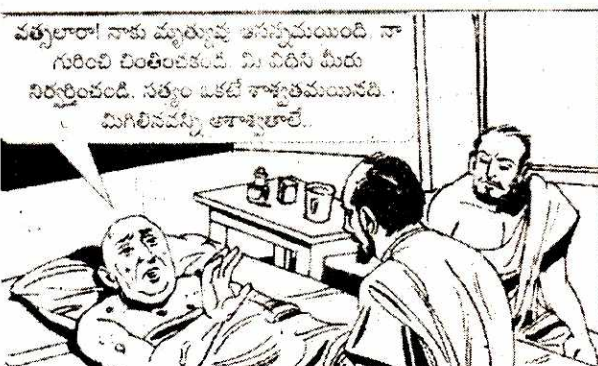
అవన్నీ మర్చిపో జగన్నాథ! ఈ దబ్బు తీసుకోని వెంటనే వెళ్ళిపో! మహారాజు కంటి పడితే నీన్ను వదలదు.



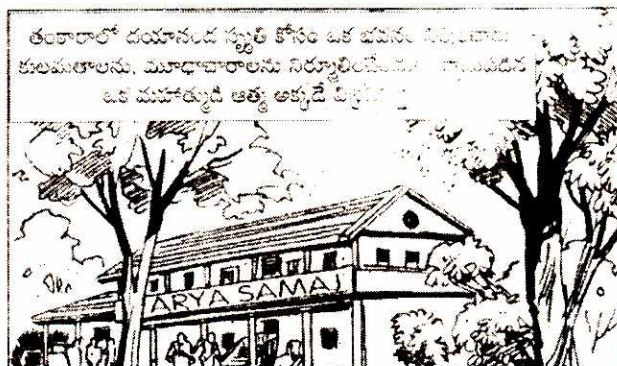
వైద్యం కోసం దయానందను జోధ్పూర్ నుంచి అబ్బోర్ కు తీసుకువెళ్ళారు.

స్వామిజీ! ఈ స్థితిలో మీరు జోధ్పూర్ నుంచి వెళ్ళిపోవడం బాధగా ఉంది. నా ఆశ్చర్యం ఏమిటంటే..

బాధపడకుండా రాజా!



వత్సలా! నాకు మృత్యువు అసన్నమయింది నా గురించి చింతించకుండా మీ విధిని మీరు నిర్వహించండి. సత్యం ఒకటి కాళ్ళతమయినది.. మిగిలినవన్నీ అశాశ్వతాలే.



తంకారాలో దయానంద స్వర్ణ కోసం ఒక భవనం నిర్మించారు కులమతాలను, మూఢాచారాలను నిర్మూలించేందుకు.. నానువదివేల అవ మహాత్ముడి ఆత్మ అక్కడే ఉన్నాడు.

होने लगे और आर्यावर्त समस्त वैभव से पूर्ण हो गया। महाभारत काल तक आर्यावर्त में स्वर्णिम युग विद्यमान रहा। वेदों की सहायता से हमारे योग सिद्धि को प्राप्त ऋषि-मुनियों द्वारा धर्म, समाज, राष्ट्र व विश्व के लिए निष्पक्ष, न्याय से परिपूर्ण, मानव हितकारी व कल्याणकारी नियम व नीतियों का प्रचलन हुआ जिससे प्रत्येक मानव सुख-चैन से जीवन व्यतीत करते थे। सृष्टि के आरम्भ में रचित मनुस्मृति ने व्यवस्था दी कि वेद अखिल धर्म-संस्कृति व सभ्यता का मूल है। ज्ञान से पवित्र वा मूल्यवान इस पूरे संसार में कुछ भी नहीं है। जीवन का उद्देश्य अमृत्युदय व अपवर्ग अर्थात् मोक्ष-मुक्ति की प्राप्ति है। प्रत्येक मनुष्य को वेदाज्ञा के अनुसार प्रातःसायं सन्ध्या अर्थात् ईश्वर का ध्यान व चिन्तन, अग्निहोत्र-यज्ञ, पितृ यज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ एवं अतिथियज्ञ सम्पादित करने होते थे। शिक्षा में वेद एवं वेदों की व्याख्याएँ करने वाले ग्रन्थ हुआ करते थे। इन पर आधारित विज्ञान-प्रौद्योगिकी व शिल्प विद्या का प्रचार था। सभी लोग सम्पन्न, स्वस्थ, निरोगी, दीर्घजीवी, परोपकारी, सेवाभावी, देशभक्त, मातृ-पितृ-आचार्य भक्त हुआ करते थे। ब्रह्मचर्य, योग-ईश्वरोपासना एवं यज्ञ आदि का सर्वत्र प्रचार था। कोई भी मांसाहारी न होने के कारण पशु वध की कोई समस्या थी ही नहीं। समय-समय पर आवश्यकता होने पर हमारे ऋषि-मुनि मौखिक प्रचार के साथ वेदों व अन्य विद्याओं के सहायक ग्रन्थ बना देते थे जिनसे मिथ्या-विश्वास उत्पन्न ही नहीं होते थे। यह जान लेना आवश्यक है कि चारों वेद सभी सत्य विद्याओं के आकर ग्रन्थ हैं। मनुष्यों को अपना विवेक विकसित करने के लिए जितनी विद्याएँ एवं ज्ञान आवश्यक है वह सब, आधा-अधूरा नहीं अपितु पूर्ण, सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने मनुष्यों को प्रदान किया था। इस प्रकार लगभग 1.96 अरब वर्ष तक वैदिक धर्म अबाध रूप से आर्यावर्त भारत व सारे भूगोल व विश्व में विद्यमान रहा। इसका प्रमाण सृष्टि की आयु 1,96,08,53,113 वर्ष होना है एवं संसार का प्रथम व प्रमुख वेदेतर धार्मिक ग्रन्थ जिन्दावस्था का मात्र लगभग 2,500 वर्ष पूर्व अस्तित्व में आना है। इससे पूर्व सारी दुनियाँ में वेद एवं वैदिक साहित्य ही मात्र धर्म व कर्तव्यों का ग्रन्थ या पुस्तक थी और सभी लोग उसी का आचरण किया करते थे। जिन्दावस्था से लेकर अब तक नाना मत-मतान्तर उत्पन्न हुए जिनका मुख्य कारण धर्म व कर्तव्य-अकर्तव्य के ज्ञान में भ्रान्तियों का होना था। भारत में बौद्ध मत, जैन मत, पौराणिक मत, अद्वैत मत तथा विदेशों में यहूदी, ईसाई मत, इस्लाम मत आदि का आविर्भाव हुआ। धर्म व कर्तव्य-अकर्तव्य में भ्रान्तियों का कारण आज से लगभग 5,000 वर्ष पूर्व “महाभारत” का महायुद्ध था जिसके कारण भारत में सर्वत्र शिक्षा व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई। अन्धकार में प्रायः ऐसा होता है कि कोई भी वस्तु अपने यथार्थ स्वरूप में न दिखने के कारण उसके अनुरूप भिन्न-2 कल्पनाओं का सहारा लेना पड़ता है जिसमें कुछ सत्य व कुछ असत्य होती हैं। इसी प्रकार महाभारत के बाद अज्ञानता के काल में हुआ। महाभारत के समय में भारत में अन्तिम ऋषि जैमिनी या बादरायण हुए। उनके बाद से ऋषियों व वेदों के पारदर्शी विद्वानों की परम्परा अवरुद्ध हो गई। अल्प ज्ञानी लोगों ने अपनी अल्प मति से धार्मिक, कर्तव्य व अकर्तव्य के नये-नये ग्रन्थ बनाये व प्रचार किया जो सत्य व असत्य मान्यताओं व नियमों से मिश्रित थे। अज्ञान बढ़ता रहा और महाभारत के कुछ सौ वर्षों बाद मध्यकाल आ गया जब धर्म सम्बन्धी मान्यताओं में अधिकांशतः असत्य व अविवेक पूर्ण मान्यताओं के प्रचार व आचरण का समय था। इसी कारण कालान्तर में नाना प्रकार के मत-मतान्तर उत्पन्न हुए जिनका उल्लेख पूर्व पंक्तियों में किया गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सृष्टि की आदि में ईश्वर द्वारा वेदों के प्रादुर्भाव से वेद मत-धर्म अस्तित्व में आया। महाभारत के बाद वैदिक धर्म में जो भ्रान्तियाँ उत्पन्न हुई उनसे देश-विदेश में नाना प्रकार के मत-मतान्तरों की नींव पड़ी। धीरे-धीरे इन सभी मत-मतान्तरों से इनके अनुयायियों के हित व स्वार्थ जुड़ गए। आज सब अपने-अपने अज्ञान व भ्रान्तिपूर्ण मतों में स्थित हैं। वह यह जानना ही नहीं चाहते कि उनमें कुछ कमियाँ हैं या नहीं। कमियों को जानने व उन्हें दूर करने का कोई प्रयास ही नहीं किया जाता है। यदि वैज्ञानिकों के कार्यों पर दृष्टिपात करें तो हमें लगता है कि विज्ञान की उपलब्धियों का कारण उनका सत्य को ग्रहण करना व असत्य को त्याग देना है। धर्म में ऐसा न होने के कारण मत-मतान्तरों की संख्या बढ़ती जा रही है जबकि वैज्ञानिक सभी विषयों में एक मत हैं। धर्म के क्षेत्र में भी ऐसा ही होना चाहिये था। परन्तु अब यह वर्तमान व निकट भविष्य में सम्भव नहीं प्रतीत नहीं होता। यह होना तो एक दिन अवश्य है क्योंकि **survival of the fittest** की भाँति धर्म के क्षेत्र में सत्य को अवश्यमेव ही प्रतिष्ठित होना है। जो मत सत्य पर 100 प्रतिशत अवलम्बित होगा, वही ठहर पायेगा, अन्य नहीं।

हम यहां दो उदाहरणों से यह कहना चाहते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान वही होगा जो सृष्टि की उत्पत्ति या आरम्भ में दिया जाये और जिसे बाद में कभी भी बदलने की आवश्यकता न हो। यदि यह कहा जाये कि आरम्भ में दिया गया ज्ञान भी ईश्वरीय है और बाद में संशोधित या परिवर्तित ज्ञान भी ईश्वरीय है तो इससे ईश्वर प्रदत्त पूर्ण ज्ञान की त्रुटियाँ व अपूर्णतायें ज्ञात होती हैं जिससे

విజయరశమి పర్యటన మహోత్సవము-ఓ పతాక ఉరేగింపు

ఆంధ్ర సామాజిక మందిరములో విజయరశమి పండుగ సందర్భమున విజయ సామ సా. సా. శతాబ్దపు శుద్ధ దశమి (దివి 13-10-2013) ఉదయం 9-15 గంటలకు ఓ పతాక ఉరేగింపు రోజుగా నిర్వహించారు. దినము పూర్వం పురస్కరించుకొని ప్రత్యేక ఆహారాలు ఇవ్వబడినవి. రాష్ట్ర పురపాలకాధికారి దేశముల శాంతి నెలకొనవలెనని ఈశ్వరున్ని ప్రార్థనగా ఆర్చకత్వము నిర్వహించబడినది. ఇందులో ఆధ్వర్యములు పొందిరి. సాయంత్రం 4-00 గంటలకు ఆంధ్ర సామాజిక భవనము నుండి ఓపీ పతాక ఉరేగింపుల శమివృక్షము వరకు సుమారు 500 మంది పాల్గొని శమి పూజను నిర్వహించి పరస్పరము జిన్ని ఆకును ఇచ్చి విజయరశమి మహోత్సవం తెలుపుకొని ఆధ్వర్యములు ప్రత్యేక వాహనము ద్వారా ఉరేగింపు అంటి సాయంత్రం 6 గంటలకు శాంతిపరమముతో భగవంతుడు ప్రజలందరికి శుభం కలుగవలెనని ప్రార్థించిరి.



ईश्वर के ज्ञान में वृद्धि-हास या घटना-बढ़ना सिद्ध होता है जो कि असम्भव है। इस कथन को इस उदाहरण से समझा जा सकता है कि माता-पिता सन्तान के उत्पन्न होने के बाद उसकी बौद्धिक व शारीरिक क्षमता के अनुसार उसे ज्ञान देना आरम्भ कर देते हैं। मां बच्चे को गोद में लेकर दूध पिलाती है और उस समय जिस प्रकार की भावना करती या होती है उसका बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य या ज्ञान की वृद्धि पर प्रभाव पड़ता है। उसको सुलाने के लिए या उसे प्रसन्न करने वा व्यायाम या मालिश आदि करते समय जो वचन या लोरियां माता के मुख से उच्चारित होती हैं, वह भी एक प्रकार बच्चे को दिया जा रहा ज्ञान है। इसी प्रकार पिता के वचनों को सुनकर वह अपने माता-पिता को उनके स्वर, ध्वनि या आवाज से पहचानने लगता है। बच्चा बड़ा होता रहता है और माता-पिता भी उसे उसकी समझ में आने वाली बातें बताते रहते हैं। जब पांच वर्ष या इससे अधिक वय का होता है तो उसे आचार्यकुल, पाठशाला या विद्यालय में भेजते हैं जिससे वह नियमित शिक्षा प्राप्त कर ज्ञानी व विद्वान बने। यहां हम यह देखते हैं कि बच्चे को माता-पिता ने ज्ञान देना जन्म के लगभग साथ ही आरम्भ कर दिया है। ज्ञान प्राप्ति का यह क्रम मृत्यु पर्यन्त नाना रूपों में चलता है। पहले ज्ञान प्राप्ति किया जाता है और बाद के समय में नये ज्ञान की प्राप्ति के साथ पूर्व अर्जित ज्ञान को पुनरावृत्ति द्वारा परिपक्व किया जाता है। कोई भी माता पिता बच्चे को अधूरा, अपूर्ण, असत्य, सृष्टि क्रम का विरोधी व उसके शारीरिक, समाजिक व बौद्धिक व आत्मिक ज्ञान के विरुद्ध शिक्षा नहीं देता है। वह वहीं ज्ञान देते हैं जो उनको विदित होता है। इसी प्रकार पूर्ण ज्ञानवान सर्वज्ञ ईश्वर भी सृष्टि के आरम्भ में युवा स्त्री-पुरुषों को पूर्ण ज्ञान देता है, अधूरा व परिवर्तनीय ज्ञान नहीं देता। अतः इस सिद्धान्त के विरुद्ध मतमतान्तरों द्वारा जो विचार व तर्क दिए जाते हैं वह असत्य, भ्रामक व अपने मत की असत्य युक्तियों से रक्षा के उपाय होते हैं जिससे अल्प बुद्धि लोग ही भ्रमित होते हैं। यदि ईश्वर को बाद में या समय-समय पर परिवर्तन करने पड़ते हैं तो उन संशोधनों के लाभ से पूर्व जन्म व मृतक जीवात्मायें वंचित रहने से इसका दोष भी परमात्मा पर आता है। यह असत्य है और यह सब बातें कल्पित व भ्रान्त मत के अनुयायियों की मिथ्या युक्तियां ही सिद्ध होती हैं।

ज्ञान के उत्थान व पतन की कहानी को हम नदियों व वर्षा के उदाहरण से भी समझ सकते हैं। सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान ईश्वर से प्राप्त हुआ जो कि पूर्ण था और जिसमें किसी प्रकार की कोई न्यूनता या त्रुटि नहीं थी। आर्यावर्त के तिब्बत में मनुष्यों की उत्पत्ति के बाद मनुष्य धीरे-धीरे सारी दुनियां में फैलते रहे और वेदों के अनुसार जीवनयापन करते रहे। भारत के ऋषि-मुनियों ने भी सारे विश्व में जहां-जहां मानव थे, वेद धर्म के प्रचार की सुन्दर व्यवस्था कर रखी थी। इस कारण महाभारत काल तक अन्य कोई मत संसार में उत्पन्न नहीं हुआ। महाभारत काल के बाद वेद-धर्म के प्रचार की व्यवस्था छिन्न-भिन्न या बाधित हुई जिससे ज्ञान घटता गया और अज्ञान बढ़ता गया। सूर्य का प्रकाश जहां तक पहुंचता है, वहां सभी वस्तुएं स्पष्ट दृष्टिगोचर होती हैं और जहां वह प्रकाश नहीं पहुंचता वहां अन्धकार होने के कारण वस्तुएं स्पष्ट दृष्टिगोचर नहीं होती। अतः ज्ञान न होने, अज्ञान होने या भ्रममूलक ज्ञान के कारण मत-मतान्तर अस्तित्व में आते हैं। नदी के उदाहरण से इसे इस प्रकार जान सकते हैं कि जहां-जहां नदी जाती है उसके दोनों ओर के स्थान हरे-भरे होते हैं। वहां कृषि का कार्य उत्तम प्रकार से सम्पादित होता है। बड़ी नदियों से उसकी शाखायें निकाल कर विस्तृत भाग में सिंचाई कर कृषि उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है जिससे ऊसर भूमि भी कृषि योग्य बन जाती है। परन्तु असिंचित भूमि में कृषि की फसल या तो होती नहीं या अच्छी नहीं होती। इसी प्रकार “सत्य वैदिक धर्म” का प्रचार यदि किन्हीं स्थानों में नहीं होगा तो वहां असत्य अपना अधिकार स्वमेव प्राप्त करता है जैसे कि जिस स्थान पर प्रकाश नहीं पहुंचता वहां अन्धकार स्वमेव होता है। जहां-जहां वेदों का प्रचार किन्हीं कारणों से बन्द हो गया, रुक गया या कम हो गया वहां अज्ञान व अधर्म बढ़ने लगा जिसका कारण वहां कालान्तर में सत्य व असत्य मिश्रित मत, मतान्तर, मजहब, सम्प्रदाय आदि उत्पन्न होते गये। जहां-जहां जितनी वर्षा होती है वह भूभाग वनस्पतियों व कृषि के उत्पादों से हरे-भरे रहते हैं और जहां वर्षा कम या बिलकुल नहीं होती वहां हरियाली कम व रेगिस्तान जैसी स्थिति होती है। इसी प्रकार से धर्म व मत-मतान्तर की स्थिति है।

विज्ञान एवं धर्म के विषय में भी विचार कर लेना समीचीन है। विज्ञान ने सत्य को अपनाया। वह सारी मानव जाति की उन्नति व सुख का कारण बना। धर्म में किन्हीं कारणों से भ्रान्तियां उत्पन्न होने पर मत-मतान्तर उत्पन्न हुए। इनकी मान्यतायें कुछ समान, कुछ असमान व किंचित परस्पर विरोधी भी रही। इससे संघर्ष हुए और लाखों करोड़ लोग मृत्यु का शिकार हुए। प्रत्येक विचारशील, बुद्धिमान वा विवेकशील मनुष्य जानता है कि संसार के सभी लोगों का धर्म तो एक ही है यथा सत्य बोलना, माता-पिता, आचार्य व वृद्धों का आदर-सत्कार करना, तर्क से सिद्ध सच्चे ईश्वर की उपासना करना, सत्य का ग्रहण व असत्य का परित्याग, सत्य को मानना व मनवाना, असत्य को छोड़ना व छुड़वाना, अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करना, ज्ञान व विज्ञान को जीवन में स्थान देना व किसी का अपकार न करना एवं परोपकार व सेवाभावी जीवन व्यतीत करना, केवल अपनी उन्नति के प्रति ही सजग न होना

(पृष्ठ ३ का शेष)

बहुत से हठी दुराग्रही मनुष्य होते हैं कि जो वक्ता के अभिप्राय से विरुद्ध कल्पना किया करते हैं। विशेषकर मत वाले लोग क्योंकि मत के आग्रह से उनकी बुद्धि अन्धकार में फंस के नष्ट हो जाती है। यद्यपि इस ग्रन्थ को देखकर अविद्वान लोग अन्यथा ही विचारोंगे तथापि बुद्धिमान लोग यथायोग्य इस का अभिप्राय समझेंगे। सर्वत्मा, सर्वान्तर्यामी, सच्चिदानन्द परमात्मा अपनी कृपा से इस आशय को विस्तृत और चिरस्थायी करे। स्वमन्त्रव्यामन्त्रय प्रकाश में महर्षि ने मानव धर्म की जो हृदयग्राही परिभाषा और व्याख्या की है वह मैं यहां उद्धृत कर रहा हूँ, “मनुष्य वही जो मननशील होकर स्वात्मवत् दूसरों के सुखदुःख, हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारी के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही चले जायें परन्तु इस मनुष्यरूप धर्म से कभी भी पृथक् न होवे” यदि सर्वत्र मानव धर्म की यह परिभाषा आचरण में उतार ली जाए तो सम्प्रदाय और साम्प्रदायिकता आदि की कोई समस्या रहेगी ही नहीं और उपासना पद्धतियां और ईश्वर को मानने या न मानने के विचार भिन्न-भिन्न होने के बाद भी नास्तिक-आस्तिक सब साथ-साथ मिलकर रह सकते हैं। उन्नीसवीं सदी के महान् पुरुष तथा भारत के धार्मिक पुर्नजागरण के नक्षत्र दयानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व बहु आयामी था। वे जहाँ वेद व्याख्याता, धर्म संशोधक, समाजशास्त्री, राष्ट्र निर्माता तथा मानव जाति के महान् हितैषी थे वहाँ एक महान शिक्षा शास्त्री भी थे। मनुष्य अपने जीवन में सर्वांगीण उन्नति करे

-लक्ष्मणदास आर्य

अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना, पक्षपात रहित न्यायाचरण आदि। ईश्वर की उपासना नाना प्रकार से की जा सकती है परन्तु उसमें भी बुद्धिमानों व श्रेष्ठ लोगों का अनुसरण करना। यहां यह बताना उचित होगा की **उपासना का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ “योग दर्शन” है। इसमें किसी मत का आग्रह नहीं है। यह सारी दुनिया के सभी मतों के लोगों के लिये बनाया गया था तथा आज भी है। इसे अपनाकर ही मत-मतान्तरों का यथार्थ धर्म में एकीकरण हो सकता है। अतः विज्ञान का अनुसरण कर वैज्ञानिकों की ही भांति सत्य का ग्रहण व असत्य का त्याग प्रत्येक मत व मतान्तर, मजहब व सम्प्रदाय को करना चाहिये।**

अब आर्य समाज को लेते हैं। आर्य समाज क्या है। आर्य समाज वस्तुतः सत्य को जानने, मानने, स्वीकार करने व स्वीकार कराने वाला एक धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक क्षेत्रों में समग्र क्रान्ति करने वाला अग्रणीय आन्दोलनकारी संगठन है। जिस प्रकार वैद्य, चिकित्सक व डाक्टर रोगी के शरीर से अनावश्यक पदार्थों व रोग के किटाणुओं को नष्ट कर रोगी को स्वस्थ करते हैं इसी प्रकार आर्य समाज भी धार्मिक व सामाजिक जगत से अज्ञानता, कुरीति व मिथ्या विश्वासों आदि को दूर कर मानव जीवन को स्वस्थ करता है। इसकी उपमा का कोई अन्य संगठन देश या संसार में उत्पन्न नहीं हुआ न आज विद्यमान है। **यह आर्य समाज अपनी उपमा स्वयं ही है।** आर्य समाज ने सभी मत-मतान्तरों, मजहब व सम्प्रदाय आदि का मन्थन कर यह पाया कि संसार में केवल व केवल-मात्र वेद ही ईश्वरीय ज्ञान हैं जो शत-प्रतिशत सत्य व प्रमाणिक है। वेदों में जो कर्तव्य व अकर्तव्य बताये गये हैं, वही वस्तुतः धर्म व अधर्म वा पाप व पुण्य हैं। दुनिया के सभी लोगों को वेदों का अध्ययन कर उसके सत्य अर्थों को जानने का प्रयत्न करना चाहिये और उसी का आचरण करना चाहिये। **धर्म के पालन में वेद परम प्रमाण हैं। जो भी वेदों के विरुद्ध आचरण है वह पाप व अधर्म है।** आर्य समाज वेदों के आधार पर निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान व सच्चिदानन्द स्वरूप वाले ईश्वर की योग पद्धति से उपासना, देवयज्ञ-अग्निहोत्र का अनुष्ठान, माता-पिता-आचार्य-विद्वानों-वृद्धों की सेवा व सम्मान, पशु-पक्षियों आदि के प्रति दयाभाव व उन्हें भोजन प्रदान करना, 16 वैदिक संस्कारों में पूर्ण आस्था व उसका अनुष्ठान, देश भक्ति आदि का आचरण करना सत्य धर्म व मानव धर्म को मानता है एवं उसके सर्वत्र पालन के लिए कार्यरत एक आन्दोलन है। आर्य समाज की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह आलोचनाओं से डरता नहीं, अपितु उसका स्वागत करता है और अन्य मत-मतान्तरों की शंकाओं एवं भ्रान्तियों के समाधान के लिए तत्पर रहता है। आर्य समाज विज्ञान को महत्व देता है और धर्म में उसके प्रयोग व पालन को स्वीकार करता है। आर्य समाज किसी व्यक्ति विशेष को धर्म प्रवर्तक या ईश्वर का दूत या सन्देशवाहक न मानकर वेदों एवं वैदिक मान्यताओं को धर्म मानता है और उसके पालन कराने के लिए प्रचार इसलिए करता है कि इसी में विश्व के सभी प्राणियों का कल्याण निहित है। आर्य समाज से पहले सारे विश्व में मत-मतान्तरों में अव्यवस्था थी जिसे आर्य समाज ने वेद एवं सत्य का प्रचार कर कुछ नियंत्रित किया। **यद्यपि रुढ़िवाद, अन्यविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियाँ, असत्य व अज्ञान बढ़ रहा है फिर भी यह निश्चित है कि संसार का अन्तिम धर्म व मत सत्य व ज्ञान पर ही आधारित होगा और वह अन्य कोई नहीं अपितु वैदिक मत होगा। आर्य समाज को अपनाने में ही विश्व के सभी मानवों का हित निहित है और यदि वह ऐसा नहीं करते तो मृत्यु के बाद के अपने जीवन को वह संवार नहीं पायेंगे जो कि एक वास्तविकता है। “अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं” के अनुसार सभी मनुष्यों को अपने शुभ व अशुभ कर्मों के फलों को अवश्य ही भोगना होगा। सुख-दुख रूपी कर्मों के फलों का भोग इस जन्म व भावी जन्मों में ईश्वर अवश्य प्रदान करेगा, यह सोच कर ही कर्मों में प्रवृत्त होना विवेकपूर्ण है। अतः वैदिक धर्म का पूरी निष्ठा से पालन करने वाले सभी मनुष्य परजन्म में अन्यो से अधिक लाभकारी व भाग्यशाली होंगे।**

हमने इस लेख में संसार में धर्म, मत-मतान्तर-सम्प्रदाय-मजहबों और आर्य समाज का निष्पक्ष वर्णन किया है। आशा है कि पाठक इसके पढ़कर लाभान्वित होंगे।

आर्य समाज, नारायणपेट की ओर से दशहरा झंडा जुलूस आयोजित

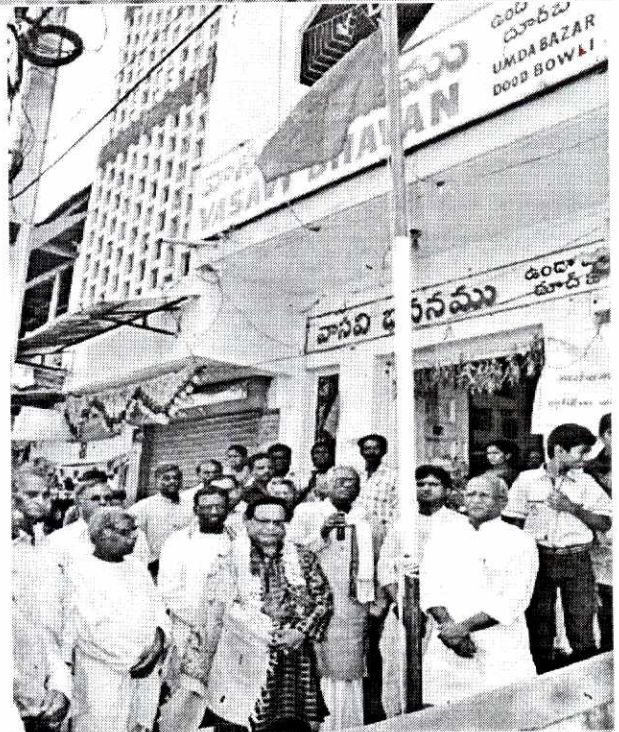
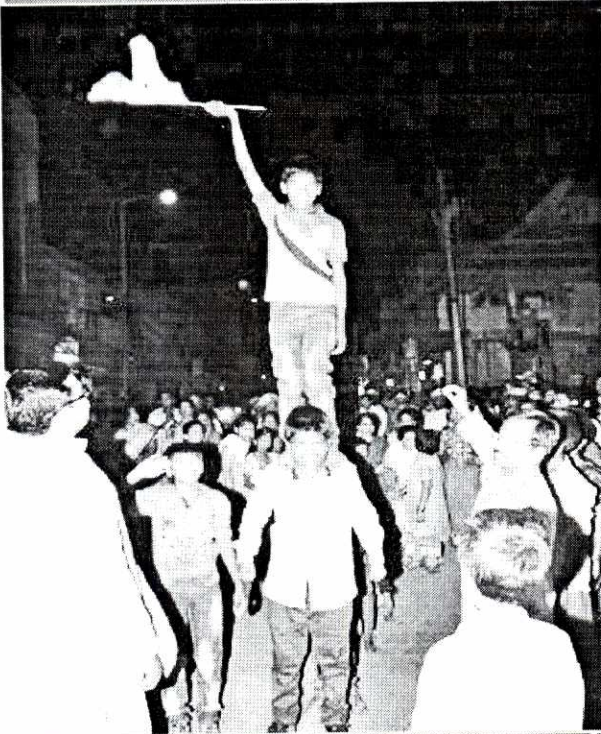
नारायणपेट, 16 अक्टूबर (मिनाक्षी खूरी) दशहरा पर्व के अवसर पर आर्य समाज नारायणपेट में विभिन्न युवा क्लबों के सहित मोहनराज (लालोटो) में अग्निहोत्र में आयोजित किया गया। यहां के प्रधान आर्य समाज मंदिर पर 300 छात्र धरारत गया। तत्पश्चात पर्व के सत्रों में सभी का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता नारायण राज सरदे ने की। अग्रसर पर अपने संबोधन में कृष्ण भगवान, विराना तथा प्रभाव ने पर्व को विशालता बनायी। सभी के अग्रश्रु नारायणराव ने कहा कि दशहरा पर्व अत्याय पर त्याग की तथा अग्रो पर धर्म की विचार है। उन्होंने कहा कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या तथा द्वेष

में मनुष्य अधर्म बन जाता है। इन सभी दुर्गुणों को दूर कर सत्यार्थ पर चलकर विजय प्राप्त हो दशहरा पर्व का संदेश है। आर्य समाज मंदिर से दोपहर 3 बजे शहर के प्रमुख व्यापारी तथा समाजसेवी श्रीनारायण मोहन (लाल लालोटो) आ ध्वज लम्बा में लेकर जुलूस आरंभ किया। यह जुलूस शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए आगे बढ़ा। इन मार्ग पर जगह-जगह शक्ति तथा गुण मालाओं से लालोटो का अभिनंदन किया गया। यह जुलूस बरम बावली के पास सार्वजनिक सभी में परिवर्तित हो गया। इस जुलूस में चैंबर ऑफ कॉमर्स नारायणपेट, बुलिगन मर्केट अर्मीसिएशन के

अध्यक्ष हरिनारायण भट्ट, भाजपा के तेलगाना के नेता तथा तेलगाना जेण्डो के उपाध्यक्ष नारायण रामाजी एवं आर्य समाज के प्रधान दत्तात्रेय कल्याणी, मंत्री वीराना कुमारी, एम. कृष्ण भगवान, कोषाध्यक्ष, सर्वोच्च मर्केट अलोसिएशन के अध्यक्ष दिलीप कुमार वैकुण्ठ, मास्टर जेक्स अलोसिएशन के अध्यक्ष विष्णु नायर, लॉयन्स क्लब ऑफ नारायणपेट टाउन के अध्यक्ष के. सुदर्शन रेड्डी, मोरेश्वरी समाज के जुगलकिशोर, बसोलास गेद पन्द्रकान, मावाडी युवा मंच से वेणु लालोटो सहित नार के प्रमुख लोगों ने भाग लिया।



विजयदशमी पर्व पर भव्य शोभा यात्रा के चित्र



Arya Jeevan

आर्य जिवन

होम-डेलीवरी सर्विसेस
 आर्य प्रतिलिपि सभ अंग्रेजी/हिंदी, 4 - 2 - 15
 मुंबई, दूरभाष नं. 022-24557946
 सुभाष बजार्, मुंबई-400 095
 फोन: 040 - 24753827, 66758707, 24557946
 संपादक - विठ्ठलराव आर्य प्रतिलिपि सभ

आर्य समाज द्वारा

विजयदशमी पर्व पर भव्य शोभायात्रा आयोजित

आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश के अंतर्गत कार्यरत नगरद्वय के सभी आर्य समाजों में सोमवार १४ अक्टूबर को विजयदशमी पर्व धूमधाम से मनाया गया। प्रातः समाजों में यज्ञ, ध्वजारोहण, प्रवचन, भाषण आदि कार्यक्रम हुए।

सायंकाल आर्य समाज किशनगंज से आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ मंत्री उम्दाबाजार आर्य समाज के प्रधान रामचंद्र कुमार के नेतृत्व में भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें ओ३म् ध्वजाओं से सुसज्जित वाहनों के माध्यम से पथारे सैकड़ों की संख्या में आर्य समाजी बन्धु एवं अन्य धर्मानुरागियों ने भाग लिया। 'वैदिक धर्म की जय' 'महर्षि दयनंद की जय' एवं 'आर्य समाज अमर रहे' के नारों से

वातावरण को गुंजायमान किया। मधुर प्रभु भक्ति और देश भक्ति के सामूहिक गीतों का गायन करते हुए आर्य समाजों की टोलियाँ आगे बढ़ रही थी। शोभायात्रा का अफजलगंज, अशोक बाजार, गौलीगुड़ा गुरु द्वारा तथा सुल्तान बाजार आर्य समाज के पास निर्मित वेदियों से पुष्पवर्षा करके स्वागत किया गया। रतारूढ़ होकर जुलूस का नेतृत्व कर रहे रामचंद्र कुमार का भी पुष्पमालाओं द्वारा स्वागत और अभिनंदन किया गया। आर्य समाज, व्यासनगर से पथारे विद्यार्थियों के जुलूस आकर्षणीय रहे। डांडिया, लाटी

चालन, देशभक्तों, क्रांतिवीरों की झाँकियों को बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रदर्शित किया गया था। रामचंद्र राजू, कार्पेटर, सुल्तान बाजार ने सुल्तान बाजार आर्य समाज की ओर से जुलूस का स्वागत किया गया।

जुलूस का समापन आर्य समाज, सुल्तान बाजार के पास हुआ। यहाँ आयोजित आम

बचाव के लिए किये जा रहे हथखण्डों की कड़ी निंदा एवं आलोचना की। उन्होंने समस्त आर्यों को देश की इस दुर्दशा को सुधारने के लिए एकजुट होकर संघर्ष करने का अह्वान किया। जयघोष और शांतिपाठ के साथ समस्त कार्यक्रम समाप्त हुआ। परस्पर पर्व की शुभकामनाएँ दी गई।



जुलूस के प्रारंभ में आर्य समाज किशनगंज में आयोजित अभिनंदन समारोह में रामचंद्रकुमार का किशनगंज और नगरद्वय के सभी आर्य समाजों की ओर से पुष्पमाला और शॉल भेंट कर स्वागत किया गया। पंडित प्रियदत्त शास्त्री एवं पंडित हरिकिशन वेदालंकार, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा ने रामचंद्र की सेवाओं का उल्लेख करते हुए अपने विचार व्यक्त किये।

सभा को रामचंद्र कुमार ने संबोधित करते हुए उन्हें शोभायात्रा का नेतृत्व प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया और भावी जीवन में आर्य समाज की सेवा पूरी क्षमता और शक्ति से करने का वचन दिया। विठ्ठलराव आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश ने अपने ओजस्वी भाषण में हमारे देश की महान संस्कृति और सभ्यता का ऐतिहासिक विवरण दिया और वर्तमान में देश की परिस्थितियों की समीक्षा की। विशेषकर देश के राजनैतिक क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार, घोटालों और दोषी नेताओं के

कार्यक्रम का संचालन उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा लक्ष्मणसिंहजी ने किया। हरिकिशन वेदालंकार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। जुलूस समिति के संयोजक अर्जुन कुमार जायसवाल और उनके सहयोगी सदस्यों के सहयोग से जुलूस सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

अशोक कुमार श्रीवास्तव द्वारा लिखित रामचंद्र कुमार की परिचय पुस्तिका और रामचंद्र द्वारा लिखित 'वैदिक धर्म और आर्यसमाज' तेलुगु पुस्तिका का सभा प्रधान विठ्ठलराव आर्य ने लोकार्पण किया।

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUEMAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

Arya Jeevan

संपादक: श्री विठ्ठल राव आर्य

(24)

प्रधान सभा ने सभा की ओर से

Date 27-10-2013

कलांजली प्रेस विठ्ठलवाडी में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया। प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं. प्र. सु. बाजार, हैदराबाद